

₹ 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

अक्टूबर 2011

- ईदुल अज़हा का वास्तविक सन्देश
  —डॉ॰ हाफ़िज़ मुहम्मद सानी
- क़ुरबानी का वास्तविक अर्थ
  —अब्दुल ग़फ़ूर ज़ाहिद
- राष्ट्रवाद के फ़ॉसीवादी सरोकार
  —डॉ॰ मुहम्मद अहमद
- नामुमकिन है पुनर्जन्म
  —दिनेश मिश्र

ڈائریاں اور کیلنڈر 2012

شب وروز (ڈائری) عام اور ڈیلکس ایڈیشن

• ہر صفحے پر قرآنی آیات و احادیث رسولؐ، انبیاء کرام، صحابہ عظام اور بزرگان سلف کے سبق آموز اقوال، معتبر شعرا کے تعمیری اور فکر انگیز اشعار • شروع و آخر کے ۶۴ صفحات پر اہم و دل چسپ معلومات، مسنون دعائیں، خطباتِ جمعہ و نکاح اور ان کا ترجمہ، قربانی، عقیقے، نمازِ جنازہ اور استخارے کی ماثورات • نقشہ اوقات نماز • اردو اکادمیوں اور مختلف دینی جماعتوں کے پتے اور ان کے فون نمبر • پوسٹ آفس سے متعلق ضروری قواعد و ضوابط • انسانی حقوق کی سرکاری و غیر سرکاری تنظیموں، مرکزی حکومت کے امدادی اداروں، حق اطلاعات اور آن لائن اسلامی و تعلیمی معلومات کی اہم ویب سائٹ • اقلیتی ترقیاتی و مالیاتی کارپوریشن اور خاص سفارت خانوں کے پتے • لوک سبھا اور راجیہ سبھا کے مسلم ممبروں کی فہرست کے علاوہ بہت ساری دوسری معلومات سے مزین ایک دل چسپ و مفید ڈائری۔

صفحات: ۴۳۲ نفیس کاغذ، دیدہ زیب ٹائٹل۔

اسلامی ڈائری (پاکٹ سائز)

• ہر صفحہ قرآنی آیات، احادیثِ رسولؐ، بزرگوں کے اقوال اور بزرگ و تعمیر پسند شعرا کے تعمیری و فکر انگیز اشعار سے مزین • ۲۵ صفحات پر مشتمل اہم اور ضروری معلومات۔ • کل صفحات: ۲۰۸ • نفیس اور عمدہ کاغذ۔

کیلنڈر

• چار رنگوں پر مشتمل سفید میٹ پیپر پر نفیس طباعت • ہر صفحے پر منتخب قرآنی آیات کے اردو، ہندی اور انگریزی تراجم کے ساتھ ایک دیدہ زیب کیلنڈر • ۳ ورقی دو طرفہ طباعت، قرآنی آیات کے دل کش طغرے اور ہر مہینے کی تاریخیں نمایاں حروف میں۔

آندھرا پردیش کے خریداران
مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز کے
سب ڈپو چھتہ بازار
حیدرآباد سے اور کرناٹک و گوا کے خریداران
سب ڈپو مکتبہ اسلامی
بنگلور سے رجوع کریں۔

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 21 अंक 5 नवम्बर 2011

और लोगों में हज के लिए उद्घोषणा कर दो कि "वे प्रत्येक गहरे मार्ग से, पैदल भी और दुबली-दुबली ऊंटनियों पर, तेरे पास आएं।" **–क़ुरआन**

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

मानवता का मंत्र

मानवता ही मानव-कुल के जीवन का आधार,
मानवता से ही बन सकता विश्व एक परिवार ।

जन जीवन में खिले न यदि
सद्भाव-सुमति के फूल,
तो लौकिक विज्ञान-ज्ञान की
सारी उन्नति धूल,

धरती होती धन्य उसी से, जो करता उपकार,
सबके हित में नित झंकृत हों उरवीणा के तार ।

सभी सुखी हों, सभी स्वस्थ हों,
सब जन रहें स्वतंत्र,
सबका हो कल्याण, यही है
मानवता का मंत्र,

कभी न होने पाये तम से मानवता की हार,
सबके मन-दीपक में जागे प्रेमिल ज्योति अपार ।

जन-जीवन में जिसने रोकी
सत्य-न्याय की राह,
उसका दाह अवश्य करेगी
दीन-दुखी की आह,

सृष्टिलोक में है सबको ही जीने का अधिकार,
सच्चा मानव कभी न करता कोई अत्याचार ।

कोई नहीं यहां टिक पाता
नर हो या कि नरेश,
सर्वोपरि परमेश एक है
नित्य सत्य 'मधुरेश',

यही स्वार्थ, परमार्थ यही है, यही मोक्ष का द्वार,
ऊर्ध्वमुखी पंकज-सम सब जन करें आत्म-उद्धार ।

● **भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'**
362, सिविल लाइंस, उन्नाव, उ०प्र०



कहां क्या है ?

मानवता का मंत्र (कविता)	–भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'	3
कुरआन ज्योति		5
मर्यादाओं के उल्लंघन पर रोक (हदीस मंजरी)		6
हज़रत इबराहीम (अ॰) : अनुकरणीय ईश समर्पण और त्याग... (संपादकीय)		7
हज़रत इबराहीम का अनुकरणीय व्यक्तित्व (आपके पत्र)		8
मुक्ति के लिए हिचक क्यों ?	–डॉ॰ ए॰ सेप्पन	15
हज़रत ज़ैनब बिन्त अली रज़ि॰ (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	19
बस क़िस्सों में मुमकिन है पुनर्जन्म	–दिनेश मिश्र	21
हज के लिए जाने वालों को सुविधाएं देने में सरकार बेबस क्यों ?	–मुहम्मद यूसुफ़ 'मुन्ना'	23
ईदुल अज़हा का वास्तविक संदेश	–डॉ॰ हाफ़िज़ मुहम्मद सानी	26-27
क़ुरबानी का वास्तविक अर्थ	–अब्दुल ग़फ़ूर ज़ाहिद	29
दुनिया को हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की शिक्षाओं की ज़रूरत	–विद्या प्रकाश	33
राष्ट्रवाद के फॉसीवादी सरोकार	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	35
इतना आसान नहीं उपभोक्ता मंच से शिकायत का समाधान	–एम॰ ए॰ राही	43
मिस्र में हुआ था सबसे पहले जूते का निर्माण (बालवीथी)		49



(36) जिन लोगों ने सत्य को मानने से इन्कार किया है वे अपने माल अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिए ख़र्च कर रहे हैं और अभी और ख़र्च करते रहेंगे, परन्तु अन्ततः यही प्रयास उनके लिए पछतावे का कारण बनेगा । फिर वे पराजित होंगे, फिर ये काफ़िर (इस्लाम विरोधी) जहन्नम की ओर घेर लाए जाएंगे, (37) ताकि अल्लाह गन्दगी को पाकी से छांटकर अलग करे और हर प्रकार की गन्दगी को मिलाकर इकट्ठा करे, फिर उस पुलिंदे को जहन्नम में झोंक दे । यही लोग अस्ली दीवालिए हैं ।[30]

(38) ऐ नबी ! इन्कार करने वालों से कहो कि अगर अब भी बाज़ आ जाएं तो जो कुछ पहले हो चुका है उसे माफ़ कर दिया जाएगा, लेकिन अगर ये उसी पिछले रवैये को दोहराएंगे तो पिछली क़ौमों के साथ जो कुछ हो चुका है, वह सबको मालूम है ।

(39, 40) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! इन अधर्मियों से युद्ध करो, यहां तक कि फ़ित्ना बाक़ी न रहे और दीन (आज्ञापालन) पूरे का पूरा अल्लाह के लिए हो जाए ।[31] फिर अगर वे फ़ित्ने से रुक जाएं तो उनके कर्मों का देखने वाला अल्लाह है और अगर वे न मानें तो जान रखो कि अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है, और वह सबसे अच्छा समर्थक और सहायक है ।

–क़ुरआन, 8 : 36-41

---

30. इससे बढ़कर दीवालियापन और क्या हो सकता है कि इन्सान जिस राह में अपना पूरा समय, सारे परिश्रम, तमाम योग्यताएं और सम्पूर्ण जीवन-पूंजी खपा दे, उसकी चरमसीमा पर पहुंचकर उसे मालूम हो कि वह उसे सीधे विनाश की ओर ले आयी है और इस मार्ग में जो कुछ उसने खपाया है उस पर कोई ब्याज या लाभ प्राप्त करने के बजाय, उसे उलटा जुर्माना भुगतना पड़ेगा ।

31. यहां फिर मुसलमानों की लड़ाई के उसी एक उद्देश्य को दोहराया गया है जिसका इससे पहले क़ुरआन की सूरा-2 (बक़रा), आयत 193 में वर्णन किया गया है । इस उद्देश्य का नकारात्मक अंश यह हैं कि फ़ित्ना (बिगाड़) बाक़ी न रहे और सकारात्मक अंश यह है कि दीन (आज्ञापालन) बिल्कुल अल्लाह के लिए हो जाए । बस यही एक नैतिक उद्देश्य ऐसा है जिसके लिए लड़ना ईमान वालों के लिए वैध आज्ञापालन बल्कि अनिवार्य (फ़र्ज़) है । इसके सिवा किसी दूसरे उद्देश्य से लड़ाई वैध नहीं है और न ईमान वालों को शोभा देता है कि उसमें किसी तरह हिस्सा लें ।

(व्याख्या के लिए देखिए क़ुरआन की सूरा-2, (बक़रा), टिप्पणी 204-205)

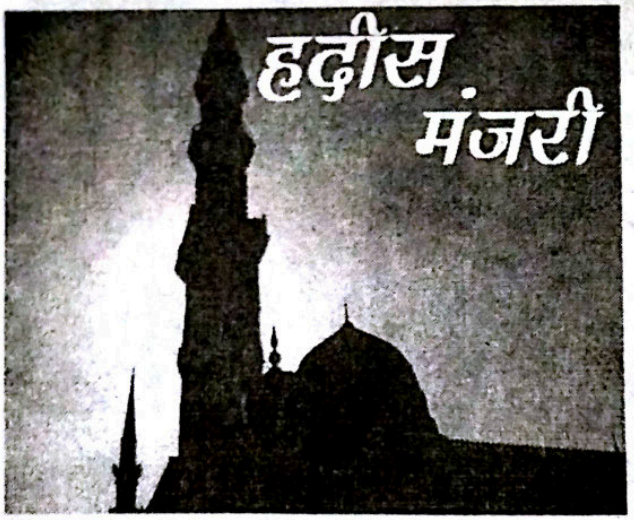

मर्यादाओं के उल्लंघन पर रोक

● हज़रत अबू मसऊद उक़बह बिन अम्र अल-बदरी (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि एक व्यक्ति नबी (सल्ल॰) के पास आया और कहा : मैं सुबह की नमाज़ में फ़लां व्यक्ति के कारण देर से शामिल होता हूं इसलिए कि वह नमाज़ को बहुत लंबी पढ़ाते हैं । रावी कहते हैं कि मैंने नबी (सल्ल॰) को किसी उपदेश और नसीहत में उस दिन से ज़्यादा क्रोधित नहीं देखा । आपने कहा : "ऐ लोगो ! तुममें से कुछ नफ़रत पैदा करने वाले हैं, तो तुममें से जो कोई लोगों का इमाम बने, तो उसे चाहिए कि वह नमाज़ को संक्षिप्त करे क्योंकि उसके पीछे बूढ़े भी होते हैं और कमज़ोर भी और वे लोग भी जिनको कोई ज़रूरत होती है ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहती हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) सफ़र से लौटे । मैंने अपने कमरे के सामने के चबूतरे से लगा हुआ बारीक कपड़े का एक पर्दा लटका रखा था जिस पर कुछ चित्र थे । जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उसे देखा, तो आपके चेहरे का रंग बदल गया और आपने उन तस्वीरों को नष्ट कर दिया और कहा : "ऐ आइशा, क़ियामत के दिन अल्लाह के यहां तमाम लोगों से बढ़कर यातना उन लोगों को दी जाएगी जो अल्लाह की रचना में समरूपता पैदा करने की कोशिश करते हैं ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है कि कुरैश के लोग एक मख़्ज़ूमी स्त्री के विषय में बहुत चिन्तित थे, जिसने चोरी की थी । उन्होंने कहा कि उसके विषय में अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से कौन बात करे ? फिर वे कहने लगे कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि॰) जो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को बहुत प्रिय हैं, उनके सिवा कौन बात करने का साहस जुटा सकता है ? अतएव हज़रत उसामा (रज़ि॰) ने आपसे बात की तो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "तुम अल्लाह तआला की हद्दों (दंडों) में से एक हद्द के विषय में सिफ़ारिश करते हो ?" फिर आप खड़े हो गये और संबोधित किया : "तुमसे पहले जो लोग विनष्ट हुए वे इसी कारण कि जब उनमें का कोई उच्च वर्ग का व्यक्ति चोरी करता तो उसे छोड़ देते । और जब उनमें का कोई कमज़ोर वर्ग का व्यक्ति चोरी करता तो उसको दंड देते । अल्लाह की क़सम, अगर मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ काट देता ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने मस्जिद में 'क़िबला' (काबा) की तरफ़ खखार पड़ा देखा, तो आप इसका सहन न कर सके यहां तक कि यह चीज़ आपके चेहरे से भी ज़ाहिर हो गयी । आप उठे और अपने हाथ से उसे खुरच दिया और कहा : "जब तुममें से कोई अपनी नमाज़ में खड़ा होता है, तो वह अपने रब से गुप्त रूप से बातें करता है । और निश्चय ही उसका रब उसके और 'क़िबला' के बीच होता है । अतः तुममें से कोई 'क़िबला' की ओर न थूके बल्कि अपनी बायीं ओर या अपने पांव के नीचे थूके ।" फिर आपने अपनी चादर का एक कोना पकड़ा, उसमें थूका और कपड़े को आपस में तह दिया और कहा : 'या इस तरह करे ।'

–बुख़ारी, मुस्लिम

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय

हिन्दी वेबसाइटें

www.quranhindi.com
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

हज़रत इबराहीम (अलैहि०) : ईश समर्पण और त्याग का अनुकरणीय जीवन

अल्लाह ने इन्सानों पर अनगिनत उपकार किये हैं । इनमें वह मार्गदर्शन भी है, जो धरती पर इन्सान के जन्म के आरंभिक काल से ही उसकी भलाई, कल्याण, नजात और सबसे बढ़कर ईश-प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए उपलब्ध कराया । यह मार्गदर्शन इस्लाम है, जो दुनिया के सभी भू-भागों एवं क़ौमों में अल्लाह के पैग़म्बरों, नबियों और सन्देशवाहकों के ज़रिये भेजा गया । अल्लाह की इन्सानों पर सदैव उदार अनुकंपा रही है । जब-जब भी इस्लामी शिक्षाओं में विकार पैदा हुआ या वे विकृत कर दी गयीं, तब-तब उसने अपने पैग़म्बरों के द्वारा उन्हें पुनः-पुनः प्रस्तुत कराया । इस्लामी शिक्षाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के और इन्सानी सभ्यता के सभी सामयिक और भावी संभावित तक़ाज़ों को पूरा करने को दृष्टि कर इस्लाम का अद्यतन और परिपूर्ण रूप अल्लाह ने अपने सर्वप्रिय अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर उतारा और आप पर ही पैग़म्बरों के भेजे जाने के सिलसिले को समाप्त कर दिया । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को उस समय धरती के केन्द्र मक्का में भेजा गया था, जब लोग हज़रत इबराहीम (अलैहि०) द्वारा प्रस्तुत इस्लामी शिक्षाओं को भुला बैठे थे । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) अल्लाह के महान पैग़म्बर थे ।

आपका जन्म अरब सागर से लगभग एक सौ मील की दूरी पर उर क्षेत्र में हुआ, जो आज इराक़ में है । आपके पिता आज़र मूर्ति का कारोबार ही नहीं करते थे, बल्कि मूर्तिशाला के महंत भी थे । आपने मूर्ति पूजा के ख़िलाफ़ आवाज़ उठायी और एकेश्वरवाद की ओर लोगों का आह्वान किया । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) को अपने इस आह्वान के कारण पिता और अन्यों के भारी विरोध का सामना करना पड़ा, लेकिन वे हर परीक्षा में खरे उतरे और सफल रहे । जब अल्लाह ने अपनी राह में अपने प्रिय बेटे हज़रत इस्माईल (अलैहि०) की क़ुरबानी पेश करने को कहा, तो आपने इस दुष्कर कर्म को भी अंजाम दिया । ईदुल अज़हा का महान पर्व आपके दिखाये मार्ग पर चलने के लिए आमंत्रित करता है । वास्तव में हज़रत इबराहीम (अलैहि०) का पूरा जीवन ईश्वर के प्रति अदम्य प्रेम, उसकी भक्ति त्याग, बलिदान और परीक्षा से ओत-प्रोत है । यह आपके पवित्र जीवन की विशिष्ट पहचान है । आपके जीवन की ये सभी घटनाएं एवं गाथाएं सारी मानवता के लिए अनुकरणीय आदर्श हैं । इस्लाम इन्हें आदर्श एवं शिक्षाप्रद मानता है । अतएव पवित्र क़ुरआन में मुसलमानों को 'मिल्लते इबराहीमी' की संज्ञा दी गयी है, 'मिल्लते इबराहीमी' से अभिप्रेत हज़रत इबराहीम (अलैहि०) का समुदाय है । पवित्र क़ुरआन में है : "एकाग्र होकर इबराहीम के पथ पर चलो और वह मुशरिकों (बहुदेववादियों) में से न था" (16:123)। इस्लाम की मौलिक धारणाओं में अल्लाह के पैग़म्बरों और सन्देशवाहकों पर ईमान लाना भी है । प्रत्येक इस्लाम धर्मावलंबी पर यह भी अनिवार्य है कि वह पैग़म्बरों और सन्देशवाहकों पर ईमान लाए, उन्हें माने । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) के जीवन-आदर्शों को जीवन में उतारने की शिक्षा इसके अपेक्षित है ।

हज़रत इबराहीम (अलैहि०) का अनुकरणीय व्यक्तित्व

प्रतिवर्ष दुनिया के कोने-कोने से विभिन्न देशों से भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी इस्लाम धर्मानुयायी श्रद्धालु मुसलमान लाखों की संख्या में विभिन्न साधनों से ज़िलहिज्जा की 9 तारीख़ से पहले सऊदी अरब स्थित मक्का शहर पहुंचते हैं तथा इस्लाम के पांच बुनियादी स्तंभों में एक हज की अदायगी करते हैं। हज के दूसरे दिन हज यात्री सहित विश्व भर के समस्त मुसलमान ईदुल अज़हा का त्योहार सोल्लास मनाते हैं।

ईदुल अज़हा का प्रमुख संदेश मनुष्य के आचरण में त्याग और आत्म बलिदान की भावना का संचार करना तथा ईश्वर के प्रति असीम भक्ति भावना व्यक्त करना है जिसकी मिसाल के तौर पर हमारे समक्ष हज़रत इबराहीम और हज़रत इस्माईल का जीवन वृत्तांत उपस्थित है। हज़रत इबराहीम (अलैहि०) की क़ुरबानी की कहानी काफ़ी प्रेरणादायक है।

आज जबकि समाज में चतुर्दिक भोगवाद, उच्छृंखलता और भौतिकवाद का बोलबाला है, एक-एक इंच ज़मीन के लिए भाई-भाई का गला काटने को तैयार है और दौलत तथा क्षणिक यौन सुख के लिए दुनिया बावली है, हज़रत इबराहीम का त्याग हमारे लिए अनुकरणीय आदर्श है। उनके बताये रास्ते पर अमल करके ही हम अपना तथा समाज का भला कर सकते हैं तथा अमन और ख़ुशहाली का यही एकमात्र निर्विकल्प मार्ग है। ईदुल अज़हा पर जानवर की दी जाने वाली क़ुरबानी तो एक प्रतीक मात्र है जिसका मूल अर्थ यह है कि हम ख़ुदा की राह में त्याग करें और उसके बताये हुए मार्ग को अपनाएं। इसी से समाज में शांति तथा कल्याण संभव है।

विद्या प्रकाश

सिपाह जौनपुर (उ०प्र०)

ईश्वर अवतार नहीं लेता

मासिक पत्रिका 'कान्ति' का नवांक अगस्त 2011 अंक पढ़ा। स्वामी दयानन्द रचित 'ईश्वर अवतार नहीं लेता' शीर्षक रचना का विशेष रूप से अध्ययन-पठन किया। मानव जब जन्म लेता है यह निश्चित है कि मृत्यु को अवश्य प्राप्त होता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो सच्ची भक्ति का अर्थ क़रीब-क़रीब समाप्त-सा हो गया है। धर्म के नाम मिथ्या, आडंबर, अराजकता आदि का बोलबाला हो गया है।

स्वामी दयानन्द के ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में कहा गया है कि ईश्वर 'सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार सर्वशक्तिमान सर्वेश्वर सर्वव्यापक अजर, अमर आदि है। यह भी कहा गया है सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। यंजुर्वेद में भी कहा गया कि वचनों से परमेश्वर जन्म नहीं लेता।

सच्ची भक्ति यही है कि ईश्वर सब कार्यों का पूर्ण करने वाला संपूर्ण लोकमात्र और नाम स्थान जन्मों को जानता है और जिस सांसारिक सुख-दुख से रहित, नित्यानन्द युक्त है। वही ईश्वर अपना गुरु आचार्य राजा और न्यायाधीश है। सदा उसकी भक्ति करें।

ईश्वर अवतार नहीं लेता। रचित स्वामी दयानन्द के अनमोल विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं।

इससे पूर्व 'कान्ति' के सितम्बर 2011 अंक का भी मैंने अध्ययन किया। आपका 'भ्रष्टाचार के सिंहासन पर लोकतंत्र' संपादकीय आलेख पढ़ा।

इसी प्रकार से शीर्षक 'इस बार है अस्ल मुक़ाबला भयभीत कांग्रेस और लोकपाल 'रचित सुरेन्द्र चतुर्वेदी का भी मैंने अध्ययन किया। इसके अंतर्गत मुझे यह जानकारी प्राप्त हुई कि भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी मज़बूत हो गयी हैं जिससे जनसाधारण का जीना कठिन हो गया है। 'स्वतंत्रता' की 65वीं वर्षगांठ गत 15 अगस्त 2011 को मनायी गयी। भ्रष्टाचार के विरुद्ध माननीय अन्ना हज़ारे ने जो बीड़ा उठाया है। भ्रष्टाचार के समूल नष्ट करने हेतु जन लोकपाल बिल पारित कराने का है।

अन्ना हज़ारे भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई का प्रतीक हो गये हैं। उन्हें पूरे देश में अपार जनसमर्थन प्राप्त हुआ है। राजनीतिज्ञ भ्रष्ट और लुटेरे हैं, सत्ता निष्ठुर है। सवाल अब

अनशन से बड़ा हो गया है कि अब देशवासियों को क्या करना चाहिए ? अन्ना हज़ारे को चाहिए कि वह सत्ता को उखाड़ने के लिए चुनावों तक ऐसा जनआन्दोलन चलाए जैसा जे०पी० ने चलाया था । अब यही रास्ता बचता है । किसी भी सरकार से इस बात की उम्मीद नहीं की जा सकती कि जनता सड़कों पर हो और वह संसद की गरिमा का हवाला देकर उसकी आवाज़ को कुचलती रहे । आख़िर कब तक ?

सुरेन्द्र चतुर्वेदी के सारगर्भित विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं ।

रामस्वरूप झंवर

9-10 शास्त्रीनगर विस्तार, भीलवाड़ा (राज०)

सच्ची राह

'कान्ति' का सितम्बर 2011 का अंक प्राप्त हुआ । इसमें काव्य रचना 'ख़ुदा ख़ैर करे' और 'नेकी का उपहार', काफ़ी पसन्द आयीं ।

हीरालाल कर्दम का "लोक-परलोक के सुधारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)" पढ़ा । चूंकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं, अत: उनके दिखाये गये मार्ग पर चलने पर ही लोक व परलोक का जीवन सुधार सकता है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने हमें बताया कि जिस प्रकार माता-पिता की आज्ञा का पालन करना आवश्यक है उसी प्रकार उन्हें पैदा करने वाले अल्लाह

उत्कृष्ट पत्र

डॉ० इक़बाल की समाजवादी सोच

डॉ० मुहम्मद इक़बाल के विचारों में एक ऐसी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का समर्थन मिला जो समाजवादी व्यवस्था के अधिक निकट है । उन्होंने जहां एक ओर पूंजीपतियों और ज़मीनदारों का विरोध किया, वहीं दूसरी ओर मज़दूरों और किसानों के हित में अपनी आवाज़ बुलन्द की । डॉ० सर मुहम्मद इक़बाल एक कवि के साथ एक महान चिंतक भी थे । उन्होंने अपनी काव्य संग्रह बाले-जिबरील में लिखा :

"जिस खेत से दहक़ां को मुयस्सर नहीं रोज़ी ।
उस खेत के हर ख़ोशा-ए-गंदुम को जला दो ।"

उक्त शेअर की पंक्ति के संबंध में व्याख्या करते हुए डॉ० अब्दुल मुग़नी पूर्व कुलपति ला०न० मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा ने अपनी पुस्तक "इक़बाल का निज़ामे फ़न के पृ० सं० 340 में इक़बाल द्वारा समाजवाद के संबंध में दी गयी विचारधारा एवं सामाजिक चिंतन को पेश करते हुए लिखा :

"इक़बाल ने पूंजीवादी व्यवस्था के ख़िलाफ़ हुक्म जारी किया है और आज़ादी और गुलामी की जंग में कमज़ोर और मज़बूत के बीच संघर्ष का इशारा उक्त पंक्तियों के द्वारा किया है ।

प्रोफ़ेसर अब्दुल मुग़नी को भारत तथा पाकिस्तान में इक़बाल के चिंतन को समझने वाला महत्वपूर्ण अथॉरिटी समझा जाता है । उनके द्वारा अथवा लिखी गयी बातों को प्राय: स्वीकार किया जाता है ।

डॉ० इक़बाल का समाजवाद लोगों में एकता, समानता और इन्सानों में बराबरी लाने का सिद्धांत था ।

समाजवाद से संबंधित इक़बाल के विचारों का अध्ययन करने से पता चलता है कि इक़बाल समाजवाद के दर्शन को मार्क्सवादी दर्शन से न देखकर क़ुरआन के दृष्टिकोण से ही देखते थे । क़ुरआन के आदेश के अनुसार संसार के सभी इन्सानों को इन्सानों से प्रेम, भाईचारा रखना चाहिए । आपस में बराबरी एवं समानता का पालन करते हुए जीवन निर्वाह करना चाहिए । इस्लाम में न कोई पूंजीपति होता है और न कोई ग़रीब, बल्कि सभी इन्सान को ईश्वर ने एक ही जैसा उत्पन्न किया । फिर ऊंच-नीच की भावना क्यों ? अर्थात इस्लाम का समाजवाद भाईचारे, आपसी बराबरी, प्यार, स्नेह और सामाजिक न्याय पर आधारित है । यही कारण है कि डॉ० इक़बाल ने मार्क्स के समाजवाद का समर्थन नहीं किया । इससे स्पष्ट है कि इक़बाल का समाजवादी चिंतन पूर्णरूप से आध्यात्मिक है । साथ ही सच्चाई पर आधारित है ।

कुमारी उषा

द्वारा श्री शिवेन्द्र कुमार यादव

ग्रा०-बैरियाही, पो०-पीटयाही, वाया नरहिया, मधुबनी (बिहार)

■ आपको एक वर्ष तक 'कान्ति' मासिक मुफ़्त प्राप्त होगी । –संपादक

इदारे की हिन्दी प्रकाशन

इदारा दअ्वतुल क़ुरआन

तफ़्सीर

शम्स पीरज़ादा (रह०)

हिन्दी अनुवाद

मुहम्मद नसरुल्लाह

जिल्द-1

(पारा 1 से पारा 10 तक) सूरह फ़ातिहा ता सूरह तौबा ₹ 300/-

जिल्द-2

(पारा 11 से पारा 20 तक) सूरह यूनुस ता सूरह अनकबूत ₹ 250/-

जिल्द-3

(पारा 21 से पारा 30 तक) सूरह रूम ता सूरह नास ₹ 300/-

- मौज़ूअ और ज़ईफ़ हदीसों का चलन 9/-
- क्या क़ुरआन को समझ कर पढ़ना ज़रूरी नहीं? 10/-
- तलाक़ कब और कैसे? 6/-
- सुनो अपने रब (पालनहार की) 10/-
- पारा अम्म

तफ़्सीर दअ्वतुल क़ुरआन उर्दू मुकम्मल सेट	880/-
पारा अम्म उर्दू	70/-
तफ़्सीर दअ्वतुल क़ुरआन अंग्रेज़ी मुकम्मल सेट	1015/-
पारा अम्म अंग्रेज़ी	70/-

इसके अतिरिक्त मराठी, गुजराती, अंग्रेज़ी तथा उर्दू की तफ़्सीरों के अलावा छोटी-छोटी पुस्तकें भी हैं, जो समाज के लिए बेहतर उपलब्धी हैं।

इदारा दअ्वतुल क़ुरआन

59-मुहम्मद अली रोड, मुंबई-400003

फ़ोन : 23465005

की आज्ञा का पालन करना अनिवार्य है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के अंतिम पैग़म्बर हैं । उनका पूरा जीवन हमारे लिए आदर्श है । जिस प्रकार उन्होंने अपने जीवन में अल्लाह के आदेश पर चलकर दिखाया, उसी प्रकार हमें भी अल्लाह के आदेश के अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहिए ।

अब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बाद कोई नबी नहीं आएगा, अत: उनकी उम्मत यानी हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि वह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दिखाये गये रास्ते को दूसरों को बताएं ताकि अधिक से अधिक लोग अल्लाह की राह पर चलकर लाभांवित हों ।

अल्लाह के आदेश कुरआन में अंकित है, जबकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के कथन हदीस में लिखे हुए हैं । कुरआन व हदीस में दिखयी गयी राह ही सच्ची राह है । कुरआन व हदीस पर चलने वाले का जीवन ही सार्थक है ।

रोज़ा एक ट्रेनिंग

'कान्ति' का अगस्त 2011 का अंक पढ़ा । 'संपादकीय' ''रमज़ान के रोज़ों के अपेक्षित गुण'' बहुत अच्छा लगा । रोज़ा एक ऐसी इबादत है जो बन्दे को रोकती है । अन्य इबादत में बन्दा कुछ न कुछ करता है परन्तु रोज़े का तात्पर्य है कि अल्लाह ने जो वस्तुएं हलाल की हैं, उन्हें भी अल्लाह की रज़ा के लिए छोड़ दिया जाए । रोज़ा अल्लाह के लिए है और वह जितना चाहता है उसका बदला देता है । रोज़ा एक ट्रेनिंग की तरह है ।

जब बन्दा अल्लाह और सिर्फ़ अल्लाह के लिए हलाल काम भी नहीं करता है, अर्थात् न खाना खाता है और न दिन भर पानी पीता है । तो सोचिए जो काम अल्लाह ने हराम घोषित कर दिये हैं, उन्हें अल्लाह की रज़ा के लिए क्यों नहीं छोड़ा जा सकता ।

रोज़ा इन्सान को कर्म से ही नहीं मन से भी परहेज़गार बनाता है । अत: प्रत्येक मुसलमान को चाहिए कि वह रमज़ान के महीने में पूरे रोज़े रखे और शेष 11 माह कैसे बिताने हैं, इसकी ट्रेनिंग हासिल करे ।

अबरार अहमद (लाखेरी वाले)

कोटा, राजस्थान

रामदेव आन्दोलन

योग तथा रोगोप्चार में आयुर्वेदिक औषधियों के पंतजलि औषधि निर्माता के रूप में ख्याति पाने वाले बाबा रामदेव ने देश में फैले भ्रष्टाचार तथा विदेशों में जमा कालाधन को देश में लाने के लिए जिस प्रकार से अनशन जैसा अभियान छेड़ा वह संदेहास्पद जान पड़ता है । अत: ऐसे अभियान संदेह खड़ा करते हैं कि अनशन द्वारा वह आगामी लोकसभा चुनाव में सफल उम्मीदवार बनने का दिव्य स्वप्न देख रहे थे जो कि राम मंदिर के निर्माण जैसा झूठे वादों के तुल्य नियोजित लग रहा था । भगवा वस्त्र धारण कर सफलता पश्चात वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अधीन हिन्दुत्ववादी विचारों वाली पार्टी भाजपा को पूरा सहयोग एवं समर्थन करना चाह रहे थे, जिसे राम मंदिर निर्माण में असफलताएं हाथ लगी थीं । यदि बाबा रामदेव की वास्तव में देश को भ्रष्टाचार मुक्त करने की नीयत थी तो उन्हें सर्वप्रथम कर्ता के रूप में स्वयं अपने आपको तत्पश्चात अपने अनुयायियों, सहयोगी संगठनों एवं पार्टी को भ्रष्टाचार से दूर रहने की शपथ लेनी एवं दिलवानी चाहिए थी । फिर भ्रष्टाचार लेने-देने वालों पर देश के क़ानून को सर्वोपरि मानते हुए उनके विरुद्ध कार्रवाइयों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए था । उन्हें धरना प्रदर्शन करने के बजाय भ्रष्टाचार से छुटकारा दिलाने वाला प्रशिक्षण स्थल बनाना चाहिए था, जहां भ्रष्टाचार को समाप्त करने के गुर बताये जाते ।

मलिक

नागपुर

मंदिर की आड़ में धन का धंधा

पूरा भारत ही नहीं, विदेशों में रहने वाले भारतवंसियों तक को पता है कि रामशिलापूजन के दौरान कई अरब रुपंयों से अधिक धनराशि एकत्र हुई थी जिसका हिसाब उस समय ही दिया जाना चाहिए था पर एक सोची-समझी योजना के तहत ऐसा नहीं किया गया और अब वर्षों बाद जनता की अल्प स्मृति का लाभ उठाकर कुटिलतापूर्वक यह कहा जा रहा है कि राम मंदिर के निर्माण कार्य में अब तक 22 करोड़ रुपये ख़र्च हो चुके हैं । और अब कोष में धन ख़त्म हो गया है । यह भी कि अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए फिर से चंदा लिया जाएगा । लोकपाल विधेयक में अन्ना हज़ारे को धर्म ध्वजाधारियों द्वारा किये जाने वाले अप्रकट भ्रष्टाचार की जांच भी जुड़वानी चाहिए ।

योग गुरु बाबा रामदेव को काले धन की खोज में यह बात भी जोड़नी चाहिए कि यदि जनता ने भारत स्वाभिमान

HUDA BUILDERS & DEVELOPERS

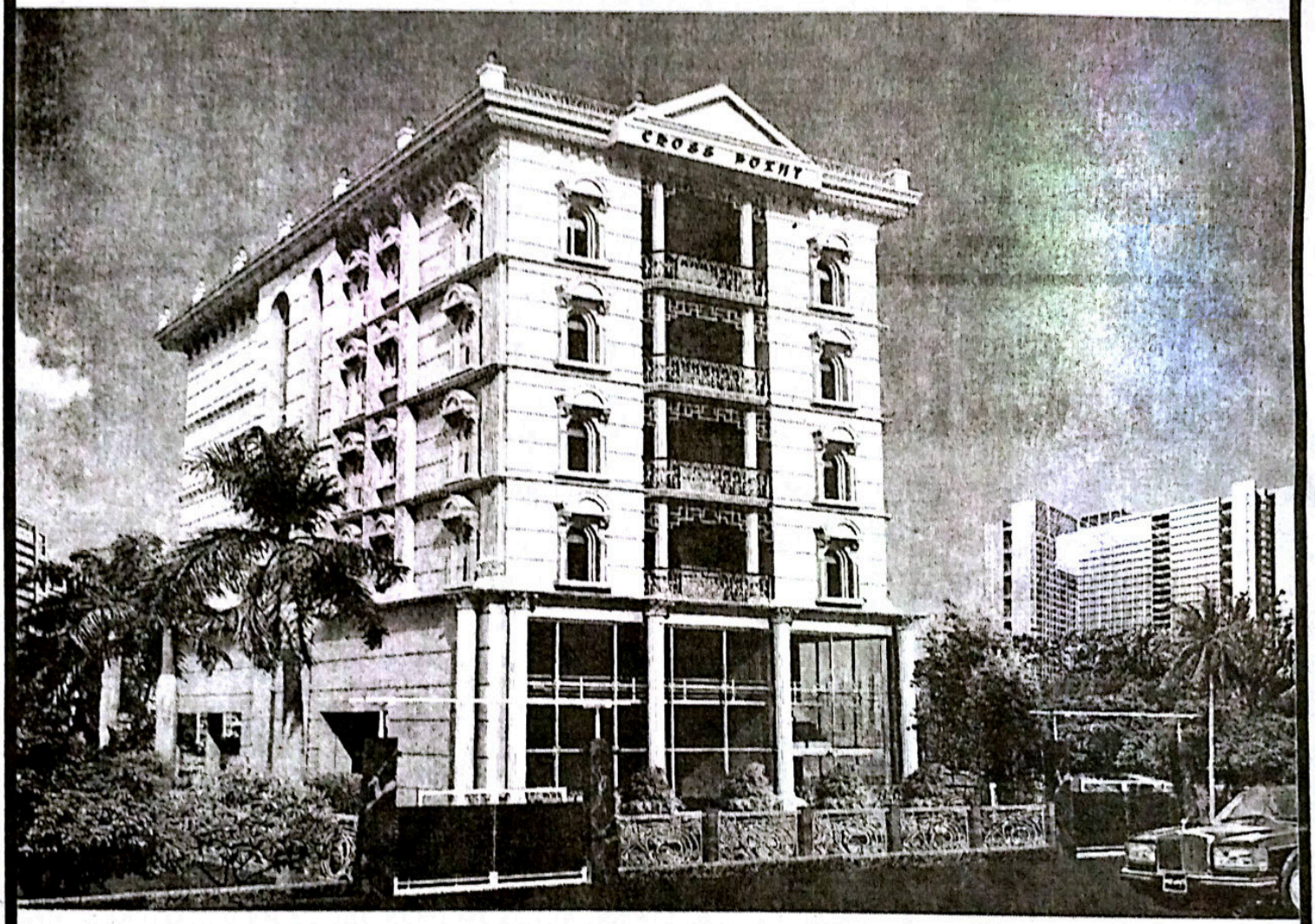

MD. MUKHTAR AHMED MOBILE NO. : 9820127170

385, Sane Guruji Marg, Next to I.T.I College (Ghass Gali),
Mumbai-400011
Tel. No. : 23482660/23482688/23482762
Fax : 23484245

पार्टी को समर्थन दिया तो राम मंदिर निर्माण के नाम पर दोऊ हाथ से बटोरे गये पूरे धन की जांच करायी जाएगी क्योंकि यह सत्य है कि इस राशि को कुल 22 करोड़ बताने वाले झूठ बोल रहे हैं । संभवत: इस विशाल धनराशि को देश से बाहर ले जाकर विदेशी बैंकों में कुछ भ्रष्ट धर्म ध्वजाधारियों द्वारा बड़ी कुशलता से अपनी निजी संपत्ति के रूप में जमा कराकर सुरक्षित कर लिया गया है ।

अयोध्या में राम मंदिर बनाने के नाम पर धन बटोरने का धंधा करने में लिप्त अधर्मियों को पहले इस बात का खुलासा करना चाहिए कि यदि उनका राम मंदिर बन ही गया तो उसमें दलित वर्ग के श्रद्धालुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा या नहीं । क्योंकि अभी तो देश में घोषित-अघोषित दोनों तरह से दलितों के देव मंदिर प्रवेश पर प्रतिबंध चल रहा है । धर्मान्तरण के मूल में यह जाति तिरस्कार मुख्य है ।

स्वामी तृप्तानंद
देवास, मध्य प्रदेश

सौभाग्य

'कान्ति' मेरे पास गत 5-6 वर्षों से आ रही है और संपादक के नाम मेरे पत्रों को भी आप द्वारा सम्मान दिया जा रहा है, इसके लिए आपका आभार ।

माह सितम्बर 2011 की पत्रिका जैसे ही मुझे मिली उसी दिन सौभाग्य से एक सेवानिवृत आई०जी० पुलिस मुझ से मिलने पधारे और उन्होंने इस पत्रिका को देखकर बड़ी प्रसन्नता जतायी और गदगद हुए । तब उन्होंने मेरे पत्र को पढ़ा । उन्होंने कहा मुझे आश्चर्य हो रहा है कि मुस्लिम समुदाय के लोगों द्वारा ऐसी अच्छी पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी में किया जा रहा है । जो सामग्री उन्होंने उसमें देखी उसे देखकर तो उन्हें और भी अचंभा हुआ । मैंने उस पत्रिका को उन्हें दी ताकि वे उसे आद्योपांत पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें ।

चूंकि माह सितम्बर 2011 की पत्रिका अब मेरे पास नहीं रही ऐसे में आपका उपकार होगा यदि माह अक्तूबर-11 की पत्रिका के साथ सितम्बर-11 की प्रति भी भिजवा दें ।

इस समय रोज़े चल रहे हैं । आप ख़ुदा के क़रीब हैं, ख़ुदा से दुआ करें कि वह हम सबको नेक रास्ते पर चलने की प्रेरणा दे ।

घेवरचन्द गोदीका
जयपुर, राजस्थान

जारी रखें शोध लेख

'कान्ति' (सितम्बर 2011) अंक मिला । उसमें आपका शोध लेख 'भारतीय संदर्भ में राष्ट्रवाद : एक विवेचन (पृ० 26-32) पढ़ा । लेख का दूसरा भाग अभी अगले अंक में छपना है, इस शोध को पढ़कर प्रसन्नता हुई, इसके लिए आपको बधाई । इसी प्रसंग में आपने संस्कृत साहित्य व अन्य पुस्तकों के प्रमाण उद्धृत किये हैं, आप अपना शोध जारी रखें ताकि विषय का स्पष्टीकरण हो सके ।

प्रो० चन्द्र प्रकाश आर्य
432 सेक्टर-8, करनाल-132001

आलोक स्तंभ

'कान्ति' (सितम्बर 2011) की सुन्दर प्रस्तुति के लिए धन्यवाद । 'कान्ति' एक आलोक स्तंभ है जिसके आसपास और कहें तो अति दूर तक भी प्रकाश ही प्रकाश पर्यवसित हो रहा है । मानवीय नैतिकता को एक नयी ऊंचाई मिल रही है, इससे 'कान्ति' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य व आपके समर्पण भाव के प्रति शुभेच्छाएं । 'भयभीत कांग्रेस' और लोकपाल-सामयिकी के अंतर्गत प्रकाशित यह आलेख अति महत्वपूर्ण है । सामयिक विषयों को भी पत्रिका में यथाविस्तृत स्थान दें । 'बालवीथी' को थोड़ा और फैलाव दें । कम से कम दो पन्ने तो अवश्य ही हों ।

'कान्ति' जुलाई-2011 अभिक्रांत हुआ, 'इन्सान के नैसर्गिक अधिकार और इस्लाम' नाम्नी प्रस्तुति प्रशंसनीय है । अध्ययन के उपरांत स्पष्ट है कि इस्लाम में मानव अधिकारों की व्यापक व्यवस्था है । मैत्रेयी पुष्पा का आलेख वास्तविकता पर आधारित है । ख़ेद का विषय है कि हम बाबाओं की तर्कशून्य वाणी खोखले आशीर्वादों और तथाकथित चमत्कारों को सच मानने की महती भूल कर बैठते हैं ।

इनसे पूर्व फ़रवरी 2011 का अंक में पहले ही पन्ने पर प्रकाशित हफ़ीज़ मेरठी की ग़ज़ल ने अत्यधिक प्रभावित किया । हफ़ीज़ मेरठी की ग़ज़लें तो आप हर अंक में छापा करते हैं कतिपय अंकों में अन्य शायरों की रचनाएं तो प्रकाशित करें ।

इस अंक का संपादकीय विशेषत: ध्यान आकृष्ट करता है । उत्कृष्ट पत्रों को सम्मान स्वरूप 1 वर्ष तक नि:शुल्क 'कान्ति' भिजवाने की योजना वास्तव में प्रशंसनीय है । इससे पाठकों में पत्र लिखने के प्रति उत्साह जगेगा और वो इस

भांति अपनी प्रतिक्रियाओं को शाब्दिक परिधान पहनाने में सक्षम होंगे ।

अभिराम सत्यज्ञ 'जयशील'
हथुआ डाकघर, बिहार

भ्रष्टाचार

आज हमारे देश
अजीब विपदा में
फंसा है
जहां देखो वहां
भ्रष्टाचार-भ्रष्टाचार
को बोल-बाला है
महंगाई
पहले हम खाते थे दाल-रोटी
अब हमें खा रही है
दाल-रोटी ।

यशपाल जैन आदर्श
जयपुर (राज०)

विशिष्ट सोच का प्रतीक

आपके यशस्वी संपादन में प्रकाशित मासिक 'कान्ति' का अगस्त 2011 अंक मिला, हार्दिक धन्यवाद । अंक में प्रकाशित संपादकीय लेख सहित सारी सामग्री आपके सघन श्रम, सतत साधना, विशिष्ट सोच-समझ और संपादन कौशल की खुद-गवाह है । 'कान्ति' का प्रत्येक अंक पठनीय ही नहीं, संग्रहणीय भी होता है । आपका यह अनुष्ठान समाज, देश एवं विश्व मानवता का पथ प्रशस्त करने में सहायक हो, इसी हार्दिक कामना के साथ ।

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
उन्नाव (उ०प्र०)

सज़ा की ज़रूरत

निम्न विकसित देशों की तरह दक्षिण कोरिया ने भी 16 वर्ष से कम आयु की बच्ची के साथ दुष्कर्म के दोषी को बाधित करने का क़ानून लागू कर दिया है । ऐसी ही सज़ा के लिए दिल्ली की एक सत्र न्यायालय ने दोषी दिनेश यादव पर अपना मत रखा, जिसने अपनी सौतेली बेटी का चार वर्षों तक यौन उत्पीड़न किया था ।

सर्वप्रथम सन 1996 में इस क़ानून का प्रयोग कैलीफोर्निया में किया गया था, लेकिन इस सज़ा के चलते वहां अपराधों में कमी नहीं आ पायी । बाधित करने का क़ानून जार्जिया, पोलैंड, ब्रिटेन में भी लागू है लेकिन जर्मनी तथा इसराईल में इस क़ानून पर पक्षकार की सहमति अनिवार्य होती है । इस क़ानून के अंतर्गत दोषी को नपुंसक कर दिया जाता है ।

अन्य देशों की तरह हमारे देश में भी बच्चों पर यौन उत्पीड़न के प्रकरण बढ़ते जा रहे हैं । इनमें पारिवारिक सगे-संबंधियों में पिता, भाई, चाचा, मामा या उनके बेटे यौन उत्पीड़न करते पाये जा रहे हैं जो कि कुल अपराधों का तीन चौथाई है । सज़ा के लागू होने पर संदेह की सीमा में आ सकती है कि वह (1) यूनिवर्सल डिकलेरेशन ऑफ़ ह्यूमेन राइट्स के चार्टर का उल्लंघन बन सकती है । (2) अत्याचारों पर आधारित हो सकती है जिस कारण दुष्प्रभाव जन्म ले सकते हैं । (3) ऐसी सज़ा उस समय हास्यस्पद बन सकती है जहां आपसी सहमति के अविवाहिताओं द्वारा वर्षों यौन संबंधों को स्वतंत्रता प्रदान की गयी हो, (4) टी०वी० फ़िल्मों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, विज्ञापन और चलते-फिरते महिलाओं का सेक्स आब्जेक्ट के रूप में अपना सर्वाधिक शरीर अर्धनग्न, कामुक, अश्लीलता द्वारा आकर्षित प्रस्तुत कर वे व्यक्ति के संयम को आपे से बाहर कर रही हैं । ऐसे ही चित्रण से व्यक्ति दुष्कर्मी बन जाता है । (5) सहशिक्षा में यौन शिक्षा भी व्यक्ति को दुष्कर्मी बना देती है । अत: ऐसी दशाओं में कठिन चिंतन-मंथन कर कारणों को दूर किया जाना चाहिए जिसका कारण दुष्कर्म की घटनाओं में स्वत: ही कमी आ जाएगी ।

मलिक
नागपुर (महाराष्ट्र)

'ख़बर'

खुल गई मुहल्ले में
एक नहीं पुलिस चौकी,
यह ख़बर सुनकर
एक जवान बेटी की
मां चौंकी ।

'जेब कतरे'

संसद और विधानसभा
के लिए मतदाता भी
कैसे-कैसे नग छांटते हैं,
जो पहले जेब काटते थे
वे अब फीता काटते हैं ।

शब्बन ख़ान 'गुल'
बहराइच (उ०प्र०)

मुक्ति के लिए हिचक क्यों ?

■ डॉ॰ ए॰ सेप्पन

मैं लंबे समय से उन रास्तों और माध्यमों पर गहन विचार करता रहा हूं कि जिनके द्वारा पीड़ित समुदाय मुक्ति पा सके । फलस्वरूप मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि मुक्ति के लिए धर्म परिवर्तन के अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं है । परंतु जो लोग बाबा साहब अंबेडकर के आदर्शों का अनुयायी होने का दावा करते हैं, वह केवल आरक्षण नीति की बातें करते हैं, वह बाबा साहब के इस कथन को पूरी तरह भूल जाते हैं कि धर्म परिवर्तन जाति व्यवस्था के उन्मूलन का सर्वश्रेष्ठ रास्ता है, जिसने असंख्य दलितों के जीवन को विनाश के कगार तक पहुंचाया है ।

यदि दास बनाए हुए समुदाय को समाज में समता का स्थान प्राप्त करना है, तो राजनीतिक क्रांति से अधिक, त्वरित सामाजिक क्रांति की आवश्यकता है । अत: मैं धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज़ करना चाहता था । मौजूदा परिस्थितियों में दलितों को कौन-सा धर्म चुनना चाहिए–

बौद्ध धर्म ? सिख धर्म ? ईसाई धर्म या इस्लाम धर्म ?

निस्संदेह दलित भाइयों का उत्तर होगा बौद्ध धर्म । परंतु मैं उन लोगों के मुक़ाबले इस समस्या से अधिक निकट हूं, जो लोग यह क्षणिक उत्तर देंगे । मैंने दलित समुदाय के बहुत से नेताओं और बुद्धिजीवियों से मिलकर पूछा कि दलितों पर होने वाले अत्याचारों से मुक्ति का क्या रास्ता है ? परंतु किसी ने ऐसा स्पष्ट उत्तर नहीं दिया, जो कि क़ाबिले अमल हो । अंतत: मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इस्लाम ही वह रास्ता है, जिसके द्वारा दलित भाई नीच कामों की प्रथा को त्याग सकते हैं, और प्राचीन प्रथाओं से मुक्त होकर समाज में समता तथा नागरिक अधिकार प्राप्त कर सकते हैं ।

यदि कोई व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अमली रास्ता बना सकता हो, जिससे दलित लोग संपूर्ण मुक्ति पा सकते हों, तो मैं अपने विचार बदलने को तैयार हूं । मैं उन लोगों से अपील करता हूं जिनके पास ऐसे अमली रास्ते हैं कि वह मुझ से समय लें और मिलकर अपनी मुक्ति की योजना समझाएं ।

मैं दलित बंधुओं को इस्लाम स्वीकार करने के लिए नसीहत निजी स्वार्थों के लिए नहीं कर रहा हूं । मैं इस्लाम के अतिरिक्त सामाजिक मुक्ति का कोई दूसरा अमली रास्ता नहीं जानता । अभी तक कोई विद्वान या शोधक ऐसा नहीं मिला, जिसके पास मुक्ति प्राप्त करने के लिए कोई विकल्प हो । यही कारण है कि मेरे द्वार उन बुद्धिजीवियों और समुदाय के दूसरे नेताओं के लिए सदैव खुले रहते हैं, जिनके पास सामाजिक मुक्ति के लिए अच्छी योजनाएं हैं ।

यह बात अत्यंत महत्वपूर्ण है कि जो दलित, हिन्दू समाज में अलग-थलग कर दिये गये हैं, उन्हें कहीं और शरण लेनी चाहिए । इस्लाम एक सर्वश्रेष्ठ स्थान है, जहां दलित लोग शरण ले सकते हैं और दासता के चंगुल से मुक्त भी हो सकते हैं । अत: दासता से मुक्ति के लिए हिचक

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) कर्म के व्यक्ति थे । न तो आप मरने की परवाह करते थे, न तो ख्याति की । आपकी चिंता केवल आदर्शों और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने की होती थी, इसलिए आप उस कार्य में सफल रहे, जिसमें हमारे महात्मा व संत असफल रहे । आपने अरब से ऊंच-नीच, छूतछात व दास प्रथा के भेदभाव को ऐसा मिटाया कि वह फिर कभी वहां सिर न उठा सका, यहां तक कि आपके देहावसान के बाद भी नहीं । आप मात्र इस्लाम की विचारधारा के प्रचारक ही नहीं थे, बल्कि वास्तविक जीवन में उसे उतार कर दिखाया भी, इसके फलस्वरूप आपको पूर्ण विजय मिली ।

क्यों ? मैं यहां इस्लाम के कुछ महत्वपूर्ण रूपों का वर्णन करना चाहूंगा और यह भी बताना चाहूंगा कि इस्लाम किस तरह दलितों को सुरक्षा प्रदान करता है । साधारणत: इस्लाम के बारे में सबसे अधिक ग़लतफ़हमियां फैलायी गयी हैं । लोग सोचते हैं कि इस्लाम एक बर्बर धर्म है, यह उन लोगों का धर्म है जो तलवार उठाये रहते हैं और यह कि इस्लाम राष्ट्र विरोधी है । लेकिन यह सब ग़लत धारणाएं हैं । मैं उन लोगों को दोष नहीं देता जो इस्लाम के बारे में ग़लत धारणाएं क़ायम करते हैं, बल्कि मैं इस्लाम वेत्ताओं को दोष देता हूं, जिन्होंने इस्लाम का संदेश इस तरह नहीं पहुंचाया कि समाज के सभी वर्ग उसे अच्छी तरह समझ सकें । किसी ने हमें महान सामाजिक क्रांतिकारी ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की महान प्रवृत्तियों के बारे में नहीं बताया, जिन्होंने छूआछूत के उन्मूलन में प्रभावपूर्ण भूमिका अदा की है । हम भी इस्लाम के सच्चे संदेश को ढूंढ़ने का प्रयास नहीं करते हैं ।

बौद्ध धर्म के अतिरिक्त सभी दूसरे धर्म ईश्वर, स्वर्ग और नरक की बात करते हैं ।

इस्लाम एकेश्वरवादी धर्म है । वह ईश्वर, स्वर्ग और नरक की शिक्षा देता है । परंतु वह मात्र ऐसा धर्म है, जो दुनिया में भी समानता की शिक्षा देता है और समानता का व्यवहार करता भी है । इस्लाम में प्रेम, मानवता, बंधुत्व, समानता, न्याय तथा एकता व सहृदयता की शिक्षाएं अद्वितीय हैं और अपनी प्रकृति में बहुत ऊंची हैं । अपने बचपन से ही पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने आपको दबाए हुए लोगों की दशा के साथ रखा । इस्लाम को समझने के उद्घाटन के तौर पर हमें महान क्रान्तिकारी व समाज सुधारक पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन पर संक्षिप्त निगाह डालनी चाहिए ।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जन्म से पहले अरब में ही नहीं, बल्कि संसार के अधिकतर लोगों में मूर्तिपूजा व्याप्त थी । यह मूर्तिपूजा कई रूपों में विद्यमान थी । सैकड़ों देवताओं की मूर्तियां पूजी जाती थीं । यहां तक कि मूर्ति कलाएं भी पूज्य मूर्तियां बन जाती थीं । वेश्यावृत्ति, जुआ, डकैती तथा हत्या जैसी बुराइयां व्यापक रूप से फैली हुई थीं और उनको रोकने की वहां कोई व्यवस्था नहीं थी ।

ऊंच-नीच, छूतछात का भेदभाव वहां बड़ी दृढ़ता से बरता जाता था । जिस तरह जानवर बाज़ार में विक्रय के लिए लाए जाते हैं, उसी तरह दासों को एक-दूसरे से बांध कर बाज़ार में बेचने के लिए लाया जाता था । दासों को गलियों में उसी तरह बेचा जाता था जिस तरह हमारी गलियों में सब्जी बेचने वाले सब्ज़ी बेचते हैं । काले दास अछूत माने जाते थे और साधारण रूप से उनका शोषण नीच व तुच्छ कामों के लिए किया जाता था ।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उस अंधकार युग में पैदा हुए जब लोग बर्बरतापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे । कुछ लोग पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के विरुद्ध झूठी अफ़वाहें फैलाते रहते थे, परन्तु वे महान पुरुष निर्दोष नैतिक चरित्र के मालिक थे । बचपन से ही वे ग़रीबों, अनाथों और वंचितों से प्यार करते थे । साधारण जनता उनमें गहरा विश्वास रखती थी । वे लोग उन्हें प्यार से अल-अमीन (अमानतदार) कहते थे । पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) उच्च नैतिक चरित्र के व्यक्ति थे । अपनी पत्नियों के अतिरिक्त उन्होंने किसी और परायी स्त्री पर नज़र नहीं डाली । आप धर्म, धैर्य तथा नैतिकता के प्रतीक थे ।

मनुष्यों के साथ भेदभाव और कमज़ोर बुनियादों पर बरते जा रहे छूतछात ने भारतीय समाज को विनाश के कगार पर पहुंचा दिया है । यद्यपि बहुत-से संत और महात्मा भारत में जन्म ले चुके हैं, परंतु वह छूतछात को मिटा न सके । भारतीय संत हिन्दू धर्म में रहते हुए सुधार का नारा लगाते रहे, परंतु वह अपने सुधार कार्य में बुरी तरह असफल रहे । वर्णाश्रम धर्म की धारणा के समक्ष उनके लगन और कड़े परिश्रम का नतीजा घटकर शून्य हो गया ।

सुधारवादी लोग छूतछात के विरुद्ध अपने भाषणों में आग उगलते थे । वह स्वयं को दलितों के मसीहा के रूप में पेश करते थे । परन्तु जब वे अपने घरों में जाते थे, तो वे हिन्दू प्रथाओं तथा रीतियों के दास बन जाते थे । इसलिए भारत के हिन्दू नेता छूतछात को मिटाने में सफल नहीं हो सके ।

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के समय में अरब देश आज के भारत की अपेक्षा अधिक कठोर उत्पीड़न झेल रहा था । परन्तु पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) इस्लाम के माध्यम से ऊंच-नीच, छूतछात के भेदभाव को पूरे अरब प्रायद्वीप से मिटाने में सफल रहे ।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) कर्म के व्यक्ति थे । न तो आप मरने की परवाह करते थे, न तो ख्याति की । आपकी चिंता केवल आदर्शों और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने की होती थी, इसलिए आप उस कार्य में सफल रहे, जिसमें

हमारे महात्मा व संत असफल रहे । आपने अरब से ऊंच-नीच, छूतछात व दास प्रथा के भेदभाव को ऐसा मिटाया कि वह फिर कभी वहां सिर न उठा सका, यहां तक कि आपके देहावसान के बाद भी नहीं । आप मात्र इस्लाम की विचारधारा के प्रचारक ही नहीं थे, बल्कि वास्तविक जीवन में उसे उतार कर दिखाया भी, इसके फलस्वरूप आपको पूर्ण विजय मिली ।

मैं यहां पर कुछ घटनाओं का वर्णन करना चाहूंगा, जिससे छुआछूत मिटाने में आपकी दिलचस्पी का पता चलेगा । आप (सल्ल०) की पत्नी हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने एक 8 वर्ष का गुलाम ख़रीदा जिसका नाम ज़ैद था । ज़ैद का काम पैग़म्बर के घरेलू कार्यों को करना था । परन्तु बाद में आपने ज़ैद को दासता से मुक्त कर दिया । आपने ज़ैद से कहा–''यदि तुम अपने माता-पिता के पास रहना चाहते हो तो जा सकते हो अन्यथा तुम मेरे साथ रह सकते हो ।'' परन्तु पैग़म्बर के प्यार और हमदर्दी की जो वर्षा उन पर हो रही थी उसमें वह वशीभूत थे, अत: उन्होंने अपना शेष जीवन भी पैग़म्बर के साथ ही गुज़ारना पसन्द किया । ज़ैद के माता-पिता मुद्रा लेकर उन्हें छुड़ाने के लिए आये, परन्तु उनकी ख़ुशी की सीमा न रही, जब उन्होंने देखा कि उनका बेटा पहले से ही दासता से मुक्त हो चुका है । ऊंच-नीच, छुआछूत, दासता एवं जात-पात के अंतर को मिटाते हुए महामानव, समाज सुधारक मानवता उपकारक, ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–''दासों से ऐसे काम न लिये जाएं जो उन्हें थका दें और यदि उनको ऐसा कठिन काम दिया जाए जो उनको थका दे तो उसमें स्वयं उनकी सहायता की जाए ।'' (सहीह बुख़ारी)

''कोई 'मेरा दास' और 'मेरी लौंडी' न कहे । तुम सब ख़ुदा के दास हो और तुम्हारी सब औरतें ख़ुदा की दासियां हैं । अत: यूं कहना चाहिए कि मेरा बच्चा, मेरी बच्ची ।''
(सहीह मुस्लिम)

सारांश यह है कि महाईशदूत ने दासों, गुलामों और लौंडियों के कष्ट ही को कम या समाप्त नहीं किया, बल्कि उनको उचित सम्मान दिलाने के लिए उनके संबंध में 'गुलाम' या 'लौंडी' शब्द का प्रयोग ही निषिद्ध ठहरा दिया । दासी (गुलाम औरत) से पैदा होने वाली संतान को क़ानूनन 'आज़ाद' क़रार दिया । दासों-दासियों को आज़ाद करने व कराने को प्रोत्साहित किया । परिणामस्वरूप इस्लामी समाज में आगे चलकर यह शोषित वर्ग विलुप्त हो गया और बड़े-बड़े ज्ञानी, विद्वान व शासक इस वर्ग की नस्ल से पैदा हुए ।

समस्त धर्मों का अध्ययन करने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इस कारागार रूपी नरक से पूर्ण स्वतंत्रता के लिए मैं इस्लाम को सर्वश्रेष्ठ मार्ग मानता हूं और उसी पर चलने की सिफ़ारिश करता हूं । विशेषकर वे लोग जिनमें स्वतंत्रता के प्रति कोई जागरूकता नहीं है या वो अभागे लोग जो बाबा साहब अंबेडकर के संघर्ष के फल (अर्थात 'आरक्षण') का आनन्द लेने की स्थिति में नहीं हैं, उनके लिए मुक्ति का रास्ता और साधन इस्लाम के सिवाय और कोई भी नहीं है ।

मुझे उन लोगों से बहुत कम सरोकार है, जो मेरे इस निष्कर्ष से सहमत नहीं हैं । मुझे चिंता है तो केवल इस बात की कि मेरे दलित बंधु भविष्य में उन यातनाओं और उत्पीड़न का शिकार न हों जिनका कि मैं हो चुका हूं । यही कारण है जो मुझे अपने दलित बंधुओं को इस्लाम स्वीकार कर लेने की प्रेरणा देने के लिए बाध्य करता है । यदि कोई मुझे इस्लाम के अलावा कोई और ऐसा रास्ता बता सकता हो, जो दलितों की समस्याओं का पूर्ण समाधान कर सकता हो तो मैं पूर्ण रूप से अपने हृदय की गहराइयों से उसको स्वीकार करने के लिए तैयार हूं ।

साथ ही मुझे अपने मुस्लिम भाइयों से भी एक अपील करनी है । एक समय ऐसा भी था कि आप हमारे संबंधी थे । यदि आप में से किसी के दिल में हिन्दुओं की तरह जाति के आधार पर मनुष्यों के विरुद्ध कोई भेदभाव पल रहा हो, तो मैं अपील करता हूं कि ऐसे त्रुटिपूर्ण धारणाओं को मिटा दीजिए । आपको डरने की आवश्यकता नहीं है कि यदि दलित लोग इस्लाम स्वीकार कर लेंगे, तो मुसलमानों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा । जो दलित मुक्ति में विश्वास रखते हैं वह सदैव आपके साथ होंगे । अत: आप साहसपूर्वक उन दलित भाइयों को स्वीकार करें जो इस्लाम को गले लगाते हैं ।

तो मैं निस्संदेह इस्लाम के रास्ते पर चलने की ही सिफ़ारिश करूंगा । यह केवल एक सिफ़ारिश है । मैं किसी को बाध्य नहीं कर रहा हूं । मुझे विश्वास है कि दलित बंधु भविष्य में यह महसूस करेंगे कि पूर्ण मुक्ति के लिए केवल इस्लाम ही एकमात्र अकसीर (Panacea) है ।

نیک خواہشات کے ساتھ

فرد قائم ربط ملت سے ہے تنہا کچھ نہیں
موج ہے دریا میں اور بیرون دریا کچھ نہیں

(علامہ اقبالؒ)

IRFAN

Mobile : 9820193421

Frank Estate Consultancy

Vicinity of Mittal Court, 'A' Wing, Jamnalal Bajaj Marg.
Nariman Point, Mumbai-400021

Regd. Office : 64, Dubash Chamber, 3rd Floor,
Kumptha Street, Ballard Estate, Fort,
Mumbai-400038,
Tel. : 22854427
E-mail : frankestate@yahoo.com
: frankestate@gmail.com

हज़रत ज़ैनब बिन्त अली (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

(गतांक से आगे)

हज़रत ज़ैनब बिन्त अली (रज़ि॰) घर वालों के साथ लंबी यात्रा की कठिनाइयां झेलती हुई दिमश्क पहुंचीं और तीन-चार दिनों के बाद उन्हें यज़ीद के दरबार में पेश किया गया । एक रक्तिम वर्ण के सीरियाई नवजवान ने फ़ातिमा बिन्त हुसैन (रज़ि॰) की ओर इशारा करते हुए कहा :

''अमीरुल मोमिनीन यह लड़की मुझे दे दीजिए ।''

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) इस अशिष्टता के विरुद्ध आक्रोशित हो उठीं और कहा, ''खुदा की क़सम, यह लड़की न तुझे मिल सकती है और न यज़ीद को । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के परिवार में से क़िसी को तू या तेरा बादशाह कदापि लौंडी नहीं बना सकता ।''

उस युवक ने फिर यज़ीद से यही गुहार लगायी, लेकिन यज़ीद ने उसे रोक दिया ।

जब हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि॰) का मुक़द्दस सिर यज़ीद के सामने पेश किया गया तो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के परिवार की महिलाएं रोने लगीं । हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने अपने भाई के सिर को संबोधित करते हुए कहा :

''ऐ हुसैन, ऐ मुहम्मद (सल्ल॰) के दिल बन्द, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के कंधे पर सवारी करने वाले, ऐ फ़ातिमा (रज़ि॰) के लाल, ऐ जन्नत के जवानों के सरदार ।''

यज़ीद ने पूछा कि, ''यह औरत कौन है ?''

उसे बताया गया कि, ''हुसैन (रज़ि॰) की छोटी बहन ज़ैनब (रज़ि॰) हैं ।''

यज़ीद ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा, ''क्या तुम्हारा भाई यह नहीं कहता था कि मैं यज़ीद से बेहतर हूं और मेरा बाप यज़ीद के बाप से बेहतर था ।''

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने जवाब दिया, ''निस्संदेह मेरा भाई सच कहता था ।''

यज़ीद ने कहा, ''मेरे आयु की क़सम, हुसैन (रज़ि॰) के नाना मेरे दादा से बेहतर थे, हुसैन (रज़ि॰) की मां मेरी मां से बेहतर थी । रहा मेरा बाप और हुसैन (रज़ि॰) का बाप, तो सबको मालूम है कि खुदा ने किसके हक़ में फ़ैसला दे दिया ।''

इस अवसर पर हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने यज़ीद और उसके दरबारियों को संबोधित करते हुए एक हृदय विदारक एवं मर्मस्पर्शी भाषण दिया । उन्होंने हम्द व सना के बाद कहा :

''ऐ यज़ीद ! समय की गर्दिश और आफ़तों के हुजूम ने मुझे तुझको संबोधित करने पर मजबूर कर दिया । याद रख ! अल्लाह हमको अधिक दिनों तक इस हाल में नहीं रखेगा । हमारे उद्देश्यों को ज़ाया और अकारण न करेगा । तूने हमें नुक़सान नहीं पहुंचाया, अपने आपको पहुंचाया है ।

आह ! तेरे आदमियों ने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के कंधे पर सवारी करने वाले और उसके भाइयों, बेटों और साथियों को निहायत बेदर्दी से ज़िब्ह कर दिया है । उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के घर की पर्दानशीं महिलाओं की बेहुर्मती की है । ऐ काश ! तू उस समय कर्बला में शहीद होने वालों को देख सकता तो अपनी सारी दौलत और मान-सम्मान के बदले उनके पहलू में खड़ा होना पसन्द करता ।

हम बहुत जल्द अपने नाना (यानी अल्लाह के रसूल सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित होकर उन मुसीबतों का उल्लेख करेंगे जो तेरे निर्दयी हाथों से हमें पहुंचे हैं और यह उस जगह होगा जहां रसूल (सल्ल॰) की संतान और उसके साथी जमा होंगे । उनके चेहरों का खून और शरीर में लगी धूल को साफ़ किया जाएगा ।

हुसैन (रज़ि॰) और उनके साथी मरे नहीं, अपने रब के पास ज़िन्दा हैं और वही उनके लिए काफ़ी है । वह सच्चा न्यायाधीश नबी की औलाद और उनके साथियों की हत्या करने वालों से ज़रूर बदला लेगा । उसी से हम आशा करते हैं और उसी से हम फ़रियाद करते हैं ।''

हैदरे क़र्रार हज़रत अली (रज़ि॰) की बेटी का गर्जन सुनकर यज़ीद और उसके दरबारी सकते में आ गये। यज़ीद को भय सताने लगा कि कहीं (वहां मौजूद) लोग रसूल (सल्ल॰) के परिवार वालों के समर्थन में मेरे विरोध में न उठ खड़े हों। इस भय के कारण उसके व्यवहार में अचानक परिवर्तन हुआ। वह उन महिलाओं को अपने ख़ास महल में ले गया और जहां तक संभव हो सका उनका स्वागत सत्कार किया और उनको शांत करने की कोशिश की।

कुछ दिनों के बाद उसने हज़रत नोमान बिन बशीर अंसारी (रज़ि॰) की निगरानी में उन्हें मदीना भेज दिया। जब क़ाफ़िला चलने लगा तो हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने कहा :

"महमलों (ऊंट के हौदों) पर काली चादरें डाल दो ताकि देखने वालों को पता चल जाए कि यह सैयदुल निसां हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) की प्यारी संतानें हैं।"

हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि॰) से जहां तक बन पड़ा उस मुसीबत के मारे क़ाफ़िले का ख़याल रखा और उन्हें कोई तकलीफ़ न होने दी। जब यह क़ाफ़िला करबला पहुंचा तो वहां बुज़ुर्ग सहाबी हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि॰) और बनू हाशिम के कुछ लोग मदीना मुनव्वरा से वहां आये हुए थे। उन्हें देखकर हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) अपने आपको रोक न सकीं और भावुक होकर बोलीं।

"ऐ बनी हाशिम ! तुम्हारा चांद डूब गया। ऐ मेरे नाना के सहाबी तूने जिस बच्चे को कभी अपने आक़ा के कंधे पर सवार देखा था उसका पाक शरीर घोड़ों के सुमों से रौंद डाला गया।"

उसके बाद वह इतना रोयीं कि रोते-रोते बेहोश हो गयीं। वहां मौजूद सभी लोग रोने लगे।

जब क़ाफ़िला मदीना मुनव्वरा पहुंचा तो दिन ढल चुका था। हज़रत अली (रज़ि॰) की बेटियों–हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰)–ने हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि॰) को उनके अच्छे व्यवहार के कारण अपनी चूड़ियां उतार कर पेश कीं और कहा : "इस समय हमारे पास और कुछ नहीं जो आपकी सेवा के मुआवज़े के रूप में पेश कर सकें।"

हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि॰) यह सुनकर रोने लगे और कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की बेटियो ! ख़ुदा की क़सम, मैंने जो कुछ किया है केवल अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) के लिए किया है। ये चूड़ियां लेकर मैं अपने अज्र ज़ाया नहीं करूंगा। ख़ुदा के लिए उन्हें अपने पास ही रखिये।"

उस दिन सारा मदीना ग़म में डूबा हुआ था। हज़ारों लोगों ने रोते हुए इन मुसीबत के मारे क़ाफ़िले की अगुआई की। हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) रौज़ा मुबारक पर हाज़िर हुईं तो उनकी चीख़ निकल गयी और ज़ुबान पर ये शब्द जारी हो गये। "ऐ मेरे प्यारे नाना जान ! मैं आपके बेटे और अपने भाई हुसैन (रज़ि॰) की शहादत की ख़बर लायी हूं। आपकी संतानों को रस्सियों से बांध कर कूफ़ा और दिमश्क की गलियों में घुमाया गया है।

उस समय रौज़ा-ए-नबवी (सल्ल॰) के पास जितने भी लोग थे सभी रोने लगे। फिर वे अपनी मां हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) की क़ब्र पर गयीं और इस दर्द से रोईं के पत्थरों का कलेजा भी कांप गया। उसके बाद वह अपने परिवार के दूसरे लोगों से मिलीं और अपने ग़म की रूदाद सुनायी और सबको धैर्य और संयम बनाये रखने को कहा।

(7)

मुसीबतों के पहाड़ ने हज़रत ज़ैनब बिन्त अली (रज़ि॰) को पूरी तरह तोड़ कर रख दिया। करबला से वापस आने के बाद कभी किसी ने उनके चेहरे पर मुस्कराहट नहीं देखी। उनकी मृत्यु के सिलसिले में कई रिवायतें मिलती हैं। एक रिवायत के अनुसार उनकी मृत्यु सन 62 हिजरी में मदीना मुनव्वरा में ही हुई।

एक दूसरी रिवायत के अनुसार हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) अपने पति हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि॰) के साथ सीरिया चली गयीं। दिमश्क के पास हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) की कुछ ज़मीन-जायदाद थीं। जीवन के अंतिम समय में वे वहीं चले गये। कुछ दिनों के बाद वह बीमार पड़ीं और वहीं उनका इन्तिक़ाल हो गया।

एक तीसरी रिवायत भी है। हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) मदीना पहुंच कर करबला में शहीद होने वालों की दास्तान लोगों को सुनाती थीं, जिससे लोग बहुत प्रभावित होते थे और उनमें अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के प्रति समर्थन की भावना जागृत होती थी। मदीना के मुख़बिरों ने इसकी सूचना यज़ीद को दी। यज़ीद ने आदेश जारी किया कि हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) को मदीना से कहीं बाहर भेज दिया जाए।

बस क़िस्सों में मुमकिन है पुनर्जन्म

● दिनेश मिश्र

आज ही नहीं शुरू से ही इन्सान के मन में 'पुनर्जन्म' को लेकर काफ़ी उत्सुकता रही है । इसे लेकर दुनिया भर में अनेक क़िस्से-कहानियां प्रचलित हैं, जिनमें प्रेम, हत्या, पूर्व जन्म का बदला लेने जैसी घटनाओं की चर्चा होती है । कुछ धार्मिक ग्रंथों में भी इसे मान्यता दी गयी है । पुनर्जन्म की कथाओं को आधार बनाकर बहुत-सी हिट फ़िल्में बनी हैं । पर विज्ञान ऐसी कहानियों को कल्पना की उड़ान मानता है कुछ समय पहले एक टी०वी० चैनल पर काफ़ी दिनों तक पुनर्जन्म पर आधारित एक सीरियल प्रसारित होता था । उसमें दिखाया जाता था कि एक विशेषज्ञ किसी व्यक्ति को किस तरह उसके पिछले जन्म में ले जाता है । इसके साथ ही फ्लैश बैक में फ़िल्म बनाकर दिखाया जाता था कि अपने उस जन्म में किस तरह वह व्यक्ति अपने रिश्तेदार के साथ मिल-जुलकर रहा है । धारावाहिक में ऐसा माहौल बनाया जाता था मानो वह व्यक्ति अपने पिछले जन्म में इस शरीर के साथ पहुचं चुका है तथा अब वह अपने सारे राज़ बता रहा है । उसके आधार पर यह साबित करने की कोशिश की जाती थी कि इस जन्म में उसे जो भी डर या बीमारी है, वह सब पिछले जन्म में घटी किसी घटना के ही कारण है । यदि वह पानी से डरता है तो पिछले जन्म के कारण, यदि वह परीक्षा में पास नहीं होता तो वह भी पिछले जन्म में पढ़ाई में कमज़ोर होने के कारण । मानो इस जन्म के दुख-दर्द सब पिछले जन्म के कारण हैं तथा यह राज़ बताने से वह ठीक हो जाएगा ।

सीरियल का एंकर अंत में उस प्रतिभागी को एक कवच देता था और कहता था कि यह चमत्कारिक कवच उसकी बुरी शक्तियों से रक्षा करेगा । बिलासपुर की एक महिला ने एक प्रादेशिक चैनल में यह दावा किया कि वह भी पिछले कुछ वर्षों से लोगों के पूर्व जन्म का राज़ बताती है व उनका इलाज करती है तथा उनकी समस्याओं से मुक्ति दिलाती है । अभी मुझे पता चला कि रायपुर, मुंबई जैसे अनेक शहरों में ऐसे अनेक विशेषज्ञ पैदा हो गये हैं और कई संस्थान खुल गये हैं जो लोगों को पूर्वजन्म की याद के आधार पर इलाज करने और उनकी समस्याओं का समाधान करने का दावा करते हैं ।

विज्ञान कहता है कि मृत्यु के बाद व्यक्ति के मस्तिष्क की हज़ारों-लाखों कोशिकाओं में संचित सारी स्मृतियां भी समाप्त हो जाती है, उनका कोई नामोनिशान नहीं रह जाता । कभी-कभी तो जब व्यक्ति ब्रेन हेमरेज, सिर की चोट, ब्रेन ट्यूमर, मनोरोग से भी पीड़ित हो जाता है, तब भी उसकी याददाश्त चली जाती है । मृत्यु के बाद जब उसका अंतिम संस्कार कर दिया जाता है तब शरीर के बाक़ी अंगों की तरह उसका मस्तिष्क भी विघटित हो जाता है । ऐसे में उसकी संचित यादें किस प्रकार किसी दूसरे जन्म में किसी अन्य व्यक्ति में फिर से पहुंच सकती हैं ? जब कोई शिशु कहीं जन्म लेता है तो उसका दिमाग़ एक कोरी स्लेट की



तरह होता है । उसके पालक उसे जो छोटी से छोटी बातें सिखाते हैं, वही उसकी स्मृति में संचित रहते हैं । वह बात करने, लिखने-पढ़ने, कपड़े पहनने और खाने-पीने से लेकर कामकाज तक समाज में रहकर विभिन्न व्यक्तियों से सीखता है । बचपन से लेकर अंत तक उसका मस्तिष्क करोड़ों सूचनाएं संचित करता है जिसमें से कुछ स्वयं के अनुभव पर आधारित होती हैं तो कुछ पढ़ने-लिखने, देखने, सुनने से संचित की हुई होती है । इसमें किसी की स्मृति पहले की या पिछले जन्म की नहीं होती । हर बच्चा छोटे से बड़ा होता है और अपनी स्मृतियां स्वयं निर्मित करता है । ऐसा नहीं होता कि कोई व्यक्ति/बच्चा जन्म से ही पूर्ण शिक्षित हो, अनुभवी हो या तकनीकी विशेषता रखता हो । यदि लोगों में पूर्वजन्म की यादें होती, स्मृतियां होतीं, तो हमें अपने आसपास ऐसे हज़ारों बच्चे देखने को मिलते जो पूर्व जन्म के अनुभव और ज्ञान के कारण पहले से ही शिक्षित और तकनीकी विशेषज्ञता रखते हों । पर ऐसा संभव नहीं है । स्टीफ़न हॉकिंग का कहना है कि हमारा जीवन भी एक कंप्यूटर के समान है । उसके अलग-अलग हिस्सों के असफल होने की वजह से यह कंप्यूटर काम करना बंद कर देता है और हमारी मृत्यु हो जाती है । जिस तरह कंप्यूटर के ख़त्म होने के बाद पूर्वजन्म जैसी कोई बात नहीं होती, उसी तरह मनुष्य की मृत्यु के बाद भी ऐसी बातें नहीं हो सकतीं ।

यदि मनुष्य का पुनर्जन्म होता तो दूसरे जीवित प्राणियों का भी होता । उनकी योनियां बदलतीं । संसार में कीड़े, मकोड़ों, पशु-पक्षियों, जानवरों की लाखों जातियां हैं, क्या उनका भी पुनर्जन्म होता है ? क्या कोई मनुष्य अपने पिछले जन्म में जाकर यह बताता है कि वह भुनगा, कौवा या लोमड़ी था, जिसकी वजह से इस जन्म में भी उसकी आवाज़ या वृत्ति वैसी ही है ?

रैशनलिस्ट लोगों की एक शाखा शरीर को अनेक प्रकार के अणुओं (मॉलिक्यूल्स) से भरी हुए कोशिकाओं का समूह मानती है । इसका मानना है कि ये अणु ही विभिन्न प्रकार की क्रिया-प्रतिक्रिया करते हैं, जिनसे जीवन पैदा होता है । हमें जीवन में जो कुछ भी आश्चर्यजनक दिखता है वह इन्हीं रासायनिक प्रतिक्रियाओं की वजह से घटित होता है । जब ये प्रतिक्रियाएं रुक जाती हैं तो कोशिकाओं के समूह भी मर जाते हैं और यह जीवन समाप्त हो जाता है । अमेरिका की एक संस्था है काउंसिल फॉर सेक्युलर ह्यूमनिज़्म' । इसके एक वैज्ञानिक ऑस्टिन क्लाइन लंबे समय से इस विषय पर काम कर रहे हैं । उनका तर्क है कि जो कुछ मैं हूं वह मेरी याददाश्त एवं व्यक्तित्व पर निर्भर है । यह दोनों मेरे मस्तिष्क पर निर्भर है । जब मेरा मस्तिष्क मर गया तो मेरी याददाश्त एवं व्यक्तित्व दोनों ख़त्म । अगर वह ख़त्म तो व्यक्ति के रूप में मैं कौन हूं इसका भी अंत हो गया । अगर हमारी शारीरिक मृत्यु के बाद भी कुछ जीवित रहता है तो वह मैं तो नहीं होऊंगा ।

पुनर्जन्म की व्याख्या करने वाले दावा करते हैं कि वे 'पास्ट लाइफ़ रिग्रेशन थिरेपी' के आधार पर इलाज करते हैं । पर इस चिकित्सा पद्धति का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है । आधुनिक मेडिकल साइंस इसे स्वीकार नहीं करता । पुनर्जन्म के रूप में प्रचारित मामलों का जब वैज्ञानिकों ने बारीकी से अध्ययन किया तब वे सभी फ़र्ज़ी व बनावटी निकले जिसमें उनके परिजनों का भी हाथ साबित हुआ । यदि पुनर्जन्म होता तो क्या किसी प्राणी का क्लोन बनाना संभव होता ? वैज्ञानिकों ने क्लोन बनाकर तो मृत प्राणी की आत्मा के दूसरे शरीर में जाने के बात को बिल्कुल ही ग़लत साबित कर दिया, क्योंकि एक ही समय में कोई व्यक्ति और उसका क्लोन-दोनों एक साथ जीवित रह सकते हैं ।

(सा० : नभाटा, नयी दिल्ली, 6 अगस्त 2011)

हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मुझे इससे मना किया है कि जो चीज़ मेरे पास न हो उसकी बिक्री करूं ।
(हदीस)

नूर मुहम्मदी होटल और कैटरर्स
अब्दुल हकीम चौक, भिंडी बाज़ार, मुंबई-400003
फ़ोन : 23456008/23476188

हज के लिए जाने वालों को सुविधाएं देने में सरकार लाचार व बेबस क्यों ?

❖ मुहम्मद सूसुफ़ 'मुन्ना'

साल में एक बार हज के सफ़र पर जाने वालों का सफ़र सरकारी अनियमितताओं एवं भ्रष्टाचार की कड़वाहट से भर जाता है । ऐसा नहीं है कि इन यात्रियों की परेशानी के बारे में केन्द्र अथवा राज्य सरकार को मालूम नहीं है । हर साल इस पाक सफ़र पर जाने वाले यात्री अपनी परेशानियों से शासन एवं प्रशासन को अवगत कराते हैं लेकिन सारी शिकायतें आश्वासनों के नीचे दब जाती हैं ।

हज कमेटी ऑफ़ इंडिया के एक पदाधिकारी का कहना है कि हर साल हाजी नये होते हैं लेकिन समस्याएं वही पुरानी होती हैं । देश में हज के सफ़र पर जाने के इच्छुक हज़ारों लोग कोटा सीमित होने की वजह से या तो हज पर नहीं जा पाते या निजी एजेंसियों की लूट-खसोट का शिकार बनते हैं । हज यात्रा कोटा बढ़ाने की लंबे समय से मांग होती रही है लेकिन इस ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है ।

हज कमेटी ऑफ़ इंडिया के सूत्रों के अनुसार हज-2011 के लिए कमेटी को क़रीब 2 लाख 70 हज़ार आवेदन मिले हैं जबकि कोटा सिर्फ़ एक लाख 40 हज़ार का ही है । यानी एक लाख तीस हज़ार लोगों को छांट दिया गया । जहां तक कोटा बढ़ाने का प्रश्न है तो कमेटी सिर्फ़ 20 हज़ार की वृद्धि चाहती है । इसके लिए उसने सऊदी सरकार व केन्द्रीय विदेश मंत्री को पत्र भी लिखा है । हज कमेटी ऑफ़ इंडिया ने हज यात्रियों को ठहराने के लिए सऊदी अरब में 33 हज़ार यूनिटें किराये पर लीं हैं । सऊदी अरब में हाजियों के लिए मकानों की व्यवस्था में हर साल भ्रष्टाचार की शिकायत आती है । लेकिन कभी इसकी निष्पक्ष एवं गंभीरतापूर्वक जांच नहीं की गयी ।

अलग-अलग राज्यों एवं ज़िलों से हज पर जाने वाले यात्रियों को भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है । देश के बहुत से राज्यों में हज हाउस न होने से हाजियों को भारी परेशानी होती है । राजस्थान के लगभग सभी हाजी दिल्ली होकर हज पर जाते हैं । दूसरे राज्य में हज हाउस बनाने की मांग लंबे समय से हो रही है । साथ ही हज यात्रा कोटा बढ़ाने की भी मांग हो रही है । जयपुर के सांसद डॉ॰ महेश जोशी ने गत दिनों प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और विदेश मंत्री एस॰एम॰ कृष्णा को पत्र लिखकर हज यात्रियों का कोटा बढ़ाने की मांग की है ।

हज कमेटी ऑफ़ इंडिया के सूत्रों के अनुसार हज-2011 के लिए कमेटी को क़रीब 2 लाख 70 हज़ार आवेदन मिले हैं जबकि कोटा सिर्फ़ एक लाख 40 हज़ार का ही है यानी एक लाख तीस हज़ार लोगों को छांट दिया गया । जहां तक कोटा बढ़ाने का प्रश्न है तो कमेटी सिर्फ़ 20 हज़ार की बढ़ोत्तरी चाहती है । इसके लिए उसने सऊदी सरकार व केन्द्रीय विदेश मंत्री को पत्र भी लिखा है ।

इस वर्ष राजस्थान से हज पर जाने के लिए क़रीब 15 हज़ार लोगों ने आवेदन किया था जबकि यहां से मात्र 4217 यात्रियों का कोटा निर्धारित किया गया है । पिछले साल यह कोटा 5700 यात्रियों का था जिसमें कटौती कर दी गयी । यहां पर यात्रियों का कोटा बढ़ाकर 8 हज़ार करने की मांग लंबे समय से हो रही है ।

इससे पहले दिसम्बर 2010 में सांसद अश्क अली टाक ने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से मुलाक़ात कर हज यात्रियों की समस्याओं से उन्हें अवगत कराया था । वे पिछले वर्ष हाजियों के साथ भेजे गये भारतीय प्रतिनिधिमंडल में एकमात्र सांसद थे ।

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने नबी (सल्ल॰) से पूछा : "कौन-सा कर्म अल्लाह तआला को सबसे बढ़कर प्रिय है ?" आप (सल्ल॰) ने कहा : "नमाज़ उसके अपने समय पर पढ़नी ।" मैंने कहा, फिर कौन-सा ? आप (सल्ल॰) ने कहा : "माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना ।" फिर कौन-सा ? आप (सल्ल॰) ने कहा : "अल्लाह की राह में जिहाद करना ।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

A WELL WISHER
MUMBAI

उन्होंने प्रधानमंत्री के सामने हाजियों की समस्या रखते हुए कहा था कि हज यात्रा के लिए रवाना होने वाले जहाज़ वक़्त पर नहीं पहुंचते ।

वापसी के समय भी उनको इसी तरह की समस्या का सामना करना पड़ता है । हाजियों के ठहरने के लिए संख्या के अनुपात में पर्याप्त कमरे नहीं होते साथ ही शौचालयों की समस्या भी प्रमुखता से सामने आती है । यात्रियों को ट्रांसपोर्ट सुविधा भी सही से नहीं मिल पाती है ।

मध्य प्रदेश भी उन राज्यों में शामिल हैं जहां हज हाउस नहीं है । इसकी मांग लंबे समय से हो रही है । गत 13 जून को मुख्यमंत्री ने भोपाल में हज हाउस बनाने का एलान कर मुसलमानों को खुश करने की कोशिश की । अब तक की घटनाओं पर नज़र डालें तो इस मामले में राजनीति ज़्यादा हुई है ।

वर्ष 2001 में तत्कालीन मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने ईदगाह हिल्स के पास एक एकड़ ज़मीन हज हाउस के लिए दी थी । बाद में यहां पर जे०एन०यू०आर०एम० अपार्टमेंट बना दिया गया ।

इसके बाद नवाब पटौदी ने ग्राम रुसल्ली में दो एकड़ ज़मीन देने की पेशकश की । इस पर कुछ लोगों ने आपत्ति कर दी । इसके बाद यह मामला खटाई में पड़ गया । अल्पसंख्यक कल्याण विभाग ने आई०जी० ऑफ़िस को तथा पीर सईद मियां ने पुराने आर०टी०ओ० ऑफ़िस को हज हाउस के लिए देने की पेशकश की । लाउखेड़ी में भी हज हाउस बनाने का प्रस्ताव रखा गया । लेकिन घटिया राजनीति के चलते यह अभी संभव नहीं हो सका ।

यही हाल झारखंड का भी है । हज हाउस बिहार में होने के कारण झारखंड के हाजियों को बिहार होकर हज के लिए जाना पड़ता है । बिहार में मुसलमानों की आबादी 14 फ़ीसदी है । किसी-किसी ज़िले में तो इनकी आबादी 40 फ़ीसदी है ।

पिछले वर्ष इन दोनों राज्यों से 5600 हज यात्री गये थे । यहां कोटा बढ़ाने की मांग भी लंबे समय से हो रही है वहीं रायपुर में हज हाउस बनाने की मांग ज़ोर पकड़ रही है । केन्द्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद और राज्यसभा सदस्य मोतीलाल वोरा ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर हज हाउस के निर्माण की मांग की है ।

जनसंख्या की दृष्टि से देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में हज हाउस बनाने की तीव्र मांग हो रही है । मालूम रहे कि पूर्वांचल के 17 ज़िलों के सैकड़ों मुसलमान हर साल बनारस से हज के लिए रवाना होते हैं । राज्य सरकार हर साल इनके लिए अस्थायी इंतिज़ाम करती है जिससे लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है । अंजुमन इस्लामिया हज हाउस बनाओ संघर्ष समिति ने गत 22 जुलाई को बनारस में प्रदर्शन कर हज हाउस बनाने की मांग की ।

जनसंख्या की दृष्टि से देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में हज हाउस बनाने की तीव्र मांग हो रही है । मालूम रहे कि पूर्वांचल के 17 ज़िलों के सैकड़ों मुसलमान हर साल बनारस से हज के लिए रवाना होते हैं । राज्य सरकार हर साल इनके लिए अस्थायी इंतिज़ाम करती है जिससे लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है ।

समिति ने कहा कि अगर ईद से पहले इस बारे में सरकार ने ठोस क़दम नहीं उठाया तो जेल भरो आन्दोलन शुरू होगा ।

सरकार ने हज यात्रियों के लिए उनकी सुविधाओं में इज़ाफ़ा किया है लेकिन यात्रियों की संख्या व परेशानियों के मद्देनज़र ये सुविधाएं ऊंट के मुंह में ज़ीरे के समान हैं ।

देश के हर राज्य में हज हाउस का निर्माण, हज कमेटियों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर रोक व यात्रियों के समय से आवागमन, उनके रहने व खाने के इंतिज़ाम में सुधार की दरकार है । देखना यह है कि इन समस्याओं को लेकर सरकार कब गंभीर होती है ?

www.shoppinglanes.com
Virtual lanes, real shopping
Softronikx Technologies & Solutions Pvt. Ltd.
B.O.: L-81, A.F.E. Okhla, New Delhi-25, M: 9958527318
Mr. S. Barvi
Business Development Director
+91 9049185093
shahbazworld@gmail.com
H.O.: B-3, Kalpataru Plaza, Bhawani Peth, Pune-02
contact@shoppinglanes.com, www.softronikx.com

ईदुल अज़हा का वास्तविक सन्देश

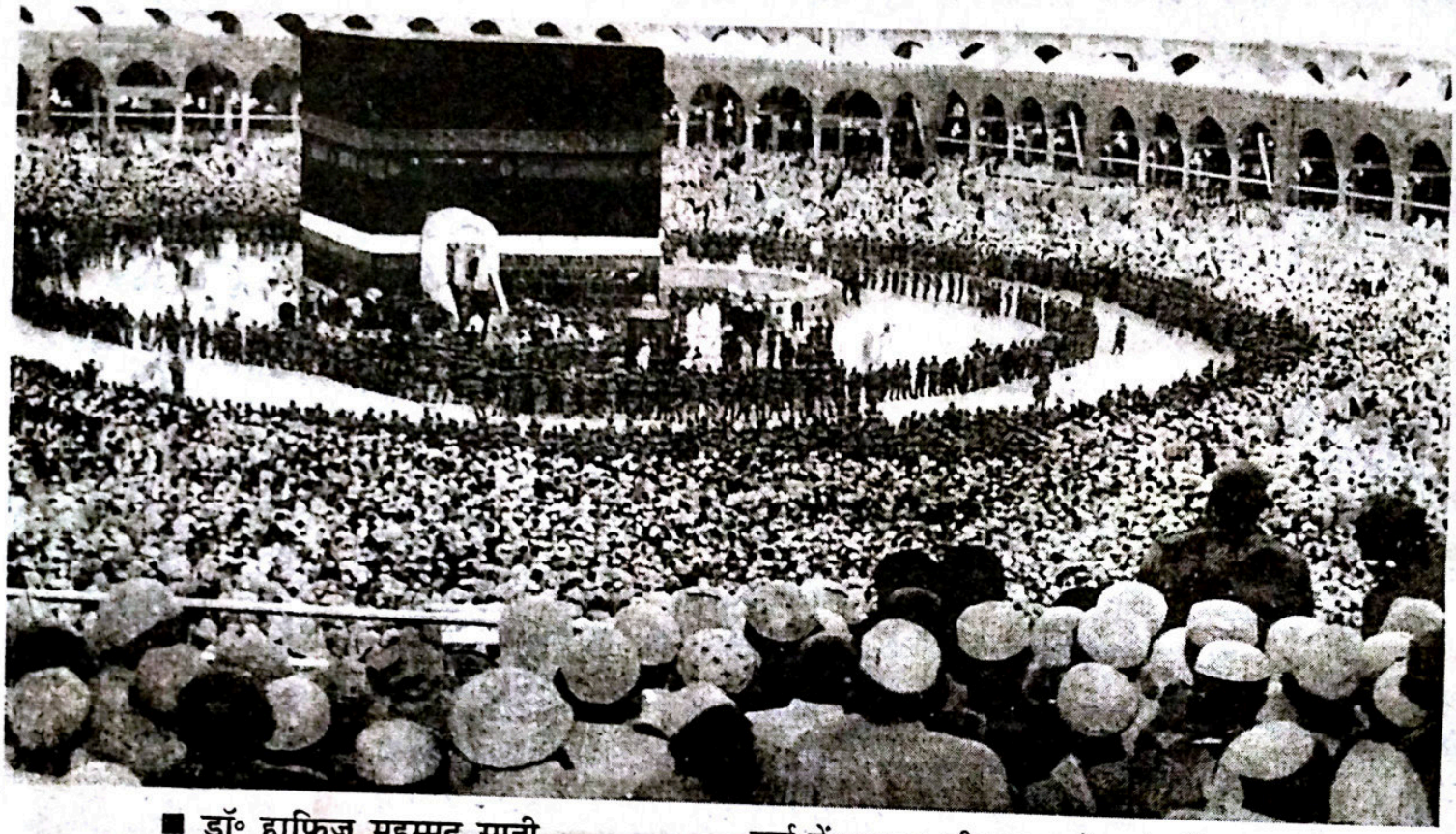

■ डॉ॰ हाफ़िज़ मुहम्मद सानी

ईदुल अज़हा अल्लाह के महान और प्रतिष्ठित पैग़म्बर हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) और उनके महान पुत्र हज़रत इस्माईल (अलैहि॰) की आज्ञापालन की अनुपम भावना, स्थायित्व एवं बलिदान की प्रतीक वह महान ऐतिहासिक क़ुरबानी की यादगार है, जो उन्होंने प्रस्तुत की । यह वह महान और अद्वितीय क़ुरबानी है जिसका उदाहरण पूरे मानव इतिहास में नहीं मिलता । इसकी पुष्टि स्वयं अल्लाह ने की है–"और हमने एक बड़ी क़ुरबानी को उनका फ़िद्या बना दिया ।"

तौरात और क़ुरआन दोनों से यह बात प्रमाणित है कि इबराहीम (अलैहि॰) के अनुयायियों का वास्तविक आधार क़ुरबानी था । यही क़ुरबानी हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के पैग़म्बराना और आध्यात्मिक जीवन की विशेषता थी । इसी परीक्षा में खरा उतरने के कारण वे और उनकी संतान हर प्रकार की नेमतों और बरकतों से मालामाल की गयी ।

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) का पूरा जीवन अल्लाह के मार्ग में पलायन, दीन पर जमे रहने और महान बलिदानों से भरा है । अल्लाह को हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की यह ईमानी भावना इतनी पसन्द आयी कि उसे ईमान का वास्तविक आधार ठहराया । यही ईमानी भावना प्रत्येक युग का ईमानी आधार और प्रत्येक युग की कसौटी है ।

दीन (सत्य धर्म) की ओर बुलाने, एकेश्वरवाद की महानता पर जमे रहने और मूर्तियां तोड़ने के अपराध में उन्हें उस समय के शासक नमरूद ने आग में डाल दिया । लेकिन आप (अलैहि॰) पूरे धैर्य और स्थायित्व के साथ एकेश्वरवाद के झंडे को ऊंचा रखने के लिए सत्य पर जमे रहे, यहां तक कि अल्लाह का आदेश आया–"हमने आग को आदेश दिया कि ऐ आग ठंडी हो जा और सलामती बन जा इबराहीम पर ।"

(क़ुरआन, 21:69)

क़ुरआन में एक-दूसरे स्थान पर है–"और जब इबराहीम के पालनहार ने कुछ बातों में उसकी परीक्षा ली और इबराहीम ने उन्हें पूरा किया तो अल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हें लोगों के लिए पेशवा बनाने वाला हूं" (क़ुरआन, 2:124)

एकेश्वरवाद ही पुष्ट धारणा



निश्चय ही इबराहीम की स्थिति एक समुदाय की थी । वह अल्लाह का आज्ञाकारी और उसकी ओर एकाग्र था । वह कोई बहुदेववादी न था । वह अल्लाह के उदार अनुग्रहों के प्रति कृतज्ञता दिखाने वाला था । अल्लाह ने उसे चुन लिया और उसे सीधे मार्ग पर चलाया । और हमने उसे दुनिया में भी भलाई दी और आख़िरत में भी वह अच्छे पूर्ण काम लोगों में से होगा ।'' (क़ुरआन, 16:120-122)

यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि अल्लाह के सामीप्य प्राप्त लोगों के साथ अल्लाह का मामला वह नहीं होता जो सामान्य लोगों के साथ होता है । उन्हें परीक्षा के कठिन से कठिन परावों से गुज़रना पड़ता है और क़दम-क़दम पर बलिदान और आज्ञापालन का प्रदर्शन करना होता है । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) भी चूंकि अल्लाह के प्रतिष्ठित एवं सम्मानित नबी थे, इसलिए उन्हें भी विभिन्न परीक्षाओं से गुज़रना पड़ा । वे अपनी महानता के अनुसार हर बार परीक्षा में पूर्ण एवं संपूर्ण सिद्ध हुए । जब उन्हें नमरूद के आदेश पर आग में डाला गया तो उस समय जिस धैर्य एवं समर्पण का उन्होंने परिचय दिया और जिस संकल्प एवं स्थायित्व को प्रस्तुत किया वह उनका ही काम था । इसके बाद जब नन्हें पुत्र इस्माईल और पत्नी हाजरा को वीरान मरुभूमि में छोड़ने का आदेश मिला तो वह भी कोई सामान्य परीक्षा न थी । बुढ़ापे की दुआओं का केन्द्र उनका इकलौता बेटा हज़रत इस्माईल को वे अल्लाह के आज्ञापालन में एक ऐसे मरुस्थल में छोड़ आये जहां न दूर-दूर तक पानी था और न ही एक तिनका पैदा होता था । आपने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा कि कहीं पितृप्रेम अल्लाह के आदेश पर छा न जाए । इसके बाद तीसरी परीक्षा जो पहली दोनों परीक्षाओं से अधिक कठिन है । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) तीन रातों तक यही स्वप्न देखते हैं कि अल्लाह कह रहा है कि ऐ इबराहीम, तू अपने इकलौते बेटे को हमारे मार्ग में क़ुरबान कर दे ।

हज़रत इबराहीम (अलैहि०) समर्पण एवं आज्ञापालन के लिए तैयार हो गये, लेकिन यह मामला चूंकि उनके अपने व्यक्तित्व तक सीमित न था, बल्कि इस परीक्षा का दूसरा

भाग वह बेटा था, जिसकी कुरबानी का आदेश हुआ था। पिता ने पुत्र को अपना स्वप्न और अल्लाह का आदेश सुनाया। हज़रत इस्माईल भी पिता की ही तरह आज्ञाकारी और समर्पित थे, तुरंत तैयार हो गये और कहा कि अगर अल्लाह की यही मर्ज़ी है तो आप मुझे इंशाअल्लाह सब्र करने वालों में पाएंगे।''

कुरआन में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार हुआ है–''जब वह (इस्माईल) उनके साथ दौड़-धूप की अवस्था को पहुंचे तो इबराहीम ने कहा कि बेटा मैं सपने में देखता हूं कि (जैसे) तुम्हें ज़ब्ह कर रहा हूं। तुम बताओ कि तुम्हारा क्या विचार है ? उन्होंने कहा कि पिता जी आपको जो आदेश मिला है वही कीजिए, अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्यवान पाएंगे। अंततः जब दोनों ने अपने आपको (अल्लाह के आगे) झुका दिया और उसने (इबराहीम ने) उसे कनपटी के बल लिटा दिया, तो उस समय क्या दृश्य रहा होगा सोचो ! और हमने उसे पुकारा, ''ऐ इबराहीम तूने स्वप्न को सच कर दिखाया, निस्संदेह यह खुली हुई परीक्षा थी। और हमने उसे (बेटे को), एक बड़ी कुरबानी के बदले में छुड़ा लिया। और हमने पीछे आने वाली नस्लों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि सलाम है इबराहीम पर, उत्तमकारों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

(कुरआन, 37:102-110)

मौलाना सैयद सुलैमान नदवी लिखते हैं–यह कुरबानी क्या थी ? यह मात्र ख़ून और मांस की कुरबानी नहीं थी, बल्कि रूह और दिल की कुरबानी थी। यह अपनी सर्वप्रिय चीज़ को अल्लाह के सामने प्रस्तुत कर देने की मिसाल थी। यह अल्लाह की उपासना और पूर्ण बन्दगी का अनुपम दृश्य था। यह सब्र और शुक्र की वह परीक्षा थी जिसे उत्तीर्ण किये बिना दुनिया का नेतृत्व और आख़िरत की भलाई नहीं मिल सकती थी।

इस्लाम का शाब्दिक अर्थ अपने आपको समर्पित कर देना और आज्ञापालन और बन्दगी के लिए गर्दन झुका देना है। यही वह सच्चाई है जो हज़रत इबराहीम (अलैहि०) और हज़रत इस्माईल (अलैहि०) की इस कुरबानी से उभरती है।

न्यूनाधिक सभी धर्मों और समाजों में 'कुरबानी' की कल्पना मिलती है, लेकिन यह अकाट्य सत्य है कि हज़रत इबराहीम (अलैहि०) की कुरबानी पूरे मानव इतिहास में एक उच्च और प्रतिष्ठित स्थान रखती है। इतिहास के पन्ने इस महान कुरबानी का उदाहरण प्रस्तुत करने से वंचित हैं। इसलिए अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की उम्मत में भी इस महान भावना और हज़रत इबराहीम (अलैहि०) की सुन्नत को इबादत का दर्जा दिया गया है।

कुरबानी वास्तव में एक महान इबादत है। इस्लाम की इबादत की व्यवस्था के अध्ययन से मालूम होता है कि इबादत का वास्तविक उद्देश्य इस्लाम का अपेक्षित मनुष्य तैयार करना है। कुरबानी मनुष्य को उस ज़िम्मेदारी के लिए तैयार करती है जो अल्लाह और उसके रसूल ने हमें सौंपी है। यह चरित्र निर्माण करती है। आध्यात्मिक विकास और नैतिक श्रेष्ठता का मार्ग प्रशस्त करती है। कुरबानी का लक्ष्य यह है कि हृदय का पवित्रीकरण हो, ईशपरायणता की आत्मा पैदा हो, अल्लाह से संपर्क बने और उसकी आज्ञापालन और बन्दगी प्रत्येक चीज़ पर छा जाए। हृदय के सुधार के बिना कोई सुधार संभव नहीं और हृदय के सुधार का वास्तविक और सबसे अधिक प्रभावशाली तरीक़ा वह इबादत है जो अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) ने ठहरा दी है।

कुरबानी उस वचन का नवीनीकरण भी है कि हमारा जीना और मरना और हमारा पूरा जीवन अल्लाह के लिए है। हमारे जीवन का लक्ष्य अल्लाह की बन्दगी है और उस बन्दगी के प्रदर्शन में किसी भी कुरबानी से पीछे नहीं हटना चाहिए। कुरआन में है–अल्लाह तक न उस (कुरबानी) के जानवर का मांस पहुंचता है न रक्त बल्कि उस तक तुम्हारी धर्मपरायणता ही पहुंचती है। (कुरआन, 22:37) ईशपरायणता ही वह वास्तविक भावना है जो बन्दगी का परिणाम और सभी इस्लामी इबादतों का अंश है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि कुरबानी की आत्मा को समझते हुए इबराहीम (अलैहि०) की सुन्नत की पैरवी में हम अपने भीतर वह भावना पैदा करें कि अल्लाह के दीन की प्रतिष्ठा के लिए, इस्लाम को फैलाने और मानवता की भलाई के लिए हम किसी भी कुरबानी से पीछे नहीं हटेंगे। यही वास्तव में ईदुल अज़हा का सन्देश है और इबराहीम (अलैहि०) की सुन्नत इस कुरबानी से वास्तविक अपेक्षा है।

क़ुरबानी का वास्तविक अर्थ

❑ अब्दुल ग़फ़ूर ज़ाहिद

ईदुल अज़हा का दिन अल्लाह तआला के महान पैग़म्बर हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के अमर बलिदान को याद करने का दिन है । हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने अपने जिगर के टुकड़े हज़रत इस्माईल (अलैहि॰) को अल्लाह के मार्ग में क़ुरबान करने का फ़ैसला किया और वे अल्लाह के उस इम्तिहान में पूरे उतरे । अल्लाह को अपने संदेशवाहक और उनके बेटे की आज्ञापालन और उनकी तत्परता इतनी पसन्द आयी कि उसे मुसलमानों के लिए इबादत ठहरा दिया ।

'क़ुरबानी' एक प्रचलन के रूप में दूसरे धर्मों में भी मौजूद है, लेकिन इस्लाम में इसका स्थान विशिष्ट है । अल्लाह तआला ने अपने रसूल (सल्ल॰) से कहा कि जिस प्रकार नमाज़ और दूसरी इबादत मेरे लिए की जाती है, उसी प्रकार क़ुरबानी भी मेरे ही नाम पर की जाए । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के साथियों (सहाबियों) (रज़ि॰) ने नबी (सल्ल॰) से पूछा, क़ुरबानी क्या है ? अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा कि तुम्हारे पूर्वज हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की सुन्नत है । सहाबा (रज़ि॰) ने फिर पूछा, इस क़ुरबानी में क्या सवाब है ? आप (सल्ल॰) ने कहा कि अल्लाह क़ुरबानी के जानवर के हर बात के बराबर नेकी देता है ।

'क़ुरबानी' के इस शब्द में क्या भेद छिपे हैं और यह शब्द 'क़ुरबानी' एक ईमान वाले बन्दे के जीवन के किन-किन पहलुओं को अपने भीतर समाये हुए है, इसमें कितनी गहराई पायी जाती है—वर्तमान समय के अधिकतर लोग इस वास्तविक भावना से अपरिचित हैं ।

क़ुरबानी का यह विस्तृत अर्थ निगाहों से ओझल है, जिसके कारण उम्मत बिखराव का शिकार है । अगर हमारे भीतर क़ुरबानी की वास्तविक आत्मा जागृत हो जाए, जैसा कि हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने अपनी प्रिय से प्रिय चीज़ को क़ुरबान करके दिखाया है तो हमारे लिए जनहित पर स्वहित को क़ुरबान करना आसान हो जाए ।

इस दुनिया में हर व्यक्ति को क़ुरबानी और बलिदान से काम लेना पड़ता है—माल की क़ुरबानी, समय की क़ुरबानी, इच्छाओं की क़ुरबानी, शारीरिक श्रम की क़ुरबानी आदि । प्रत्येक व्यक्ति में अल्लाह ने किसी न किसी श्रेणी में प्रेम की भावना और क़ुरबानी की इच्छा रख दी है ।

क़ुरबानी का केन्द्र और उद्देश्य क्या होना चाहिए ? कौन हमारी क़ुरबानियों और हमारी मुहब्बत का सबसे अधिक हक़दार है ? वह हम से किस प्रकार की क़ुरबानी चाहता है ? इस संबंध में हमेशा दुनिया में दो गिरोह रहे हैं । सत्य के अनुयायी और असत्य के अनुयायी । या ईश्वर के आज्ञाकारी और ईश्वर के अवज्ञाकारी ।

एक वर्ग ने अपनी इच्छाओं को, अपने परिवार को, अपने जैसे मनुष्यों को, ज़मीन-जायदाद, धन-संपत्ति को और राष्ट्रीय सम्मान को अपना उपास्य और अपना उद्देश्य बना लिया है । उसे अपनी क़ुरबानी और मुहब्बत का केन्द्र और अपने सफ़र का गंतव्य ठहरा लिया और उनके सारे प्रयास और सारी भागदौड़ इस दुनिया के क्षणिक जीवन तक सीमित हो गये ।

ईमान वालों का कर्म, उनकी आस्था और उनका विश्वास इससे बिल्कुल अगल है । उनकी मुहब्बत और क़ुरबानी का केन्द्र हमेशा अल्लाह का अस्तित्व ही रहा

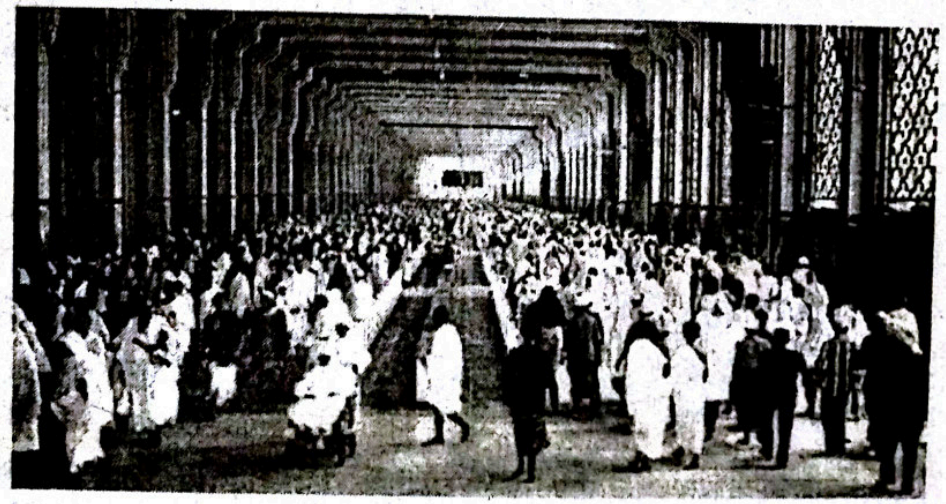

بسم الله الرحمن الرحيم

"अल्लाह की
बन्दगी करो और उसके
साथ किसी को साझी न ठहराओ।
और अच्छा व्यवहार करो माता-पिता
के साथ, नातेदारों, अनाथों, मोहताजों,
नातेदार पड़ोसियों के साथ, और उन
पड़ोसियों के साथ जिनका संबंध न हो,
और पास के व्यक्ति के साथ,
और राह चलने वालों के साथ,
और उनके साथ जो तुम्हारे
अधिकार में हों।"
(क़ुरआन, 4:36)

A WELL WISHER
MUMBAI

है । उन्होंने हर दौर में उसके रास्ते में हर तरह की क़ुरबानियां दीं । जिस क़ुरबानी की जिस समय मांग हुई उसी समय वह क़ुरबानी पेश की और उनके स्थायित्व में कोई कमज़ोरी नहीं आयी । पवित्र क़ुरआन की सूरह अहज़ाब में कहा गया है–"ईमान वालों में कितने ही ऐसे व्यक्ति हैं कि जो वचन उन्होंने अल्लाह को दिया था उसे सच कर दिखाया ।"

क़ुरबानी के बारे में अल्लाह तआला कहता है–"अल्लाह तक न उनका गोश्त पहुंचता है और न उनका ख़ून, बल्कि उस तक तो तुम्हारी परहेज़गारी पहुंचती है । क़ुरबानी की वास्तविकता यह है कि आदमी अपने इरादे और अपनी इच्छा, अपनी आदत और अपने स्वभाव के गले पर छुरी चलाए । अपने दिल के कहने पर नहीं बल्कि अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) के कहने पर चलने का फ़ैसला करे । हर मोड़ पर अल्लाह के डर और आख़िरत में जवाबदेही के ख़याल से बुराई से अपना हाथ रोक ले और दिल पर पत्थर रखकर उससे रुका रहे ।

अल्लाह का इरशाद है : और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरता है और अपने दिल को इच्छाओं से रोकता है, उसी का ठिकाना जन्नत है ।-

मुसलमान हज़रत इबराहीम (अलैहि०) की याद ताज़ा करने के लिए अल्लाह के लिए जानवरों की क़ुरबानी पेश करते हैं । क़ुरबानी केवल यही नहीं है कि जानवर का ख़ून बहा दिया जाए, बल्कि हमें इबराहीम (अलैहि०) की पूरी ज़िन्दगी को देखना होगा कि वे किस प्रकार अपने पिता आज़र के स्नेह से वंचित हुए और मूर्तिपूजा न करने के कारण उन्हें धधकती आग में डाला गया । परिवार और धन संपत्ति से वंचित होना पड़ा और फिर अपने देश से भी पलायन करके एक बंजर और निर्जल रेगिस्तान में पत्नी और दूध पीते बच्चे के साथ रहना पड़ा । यह अल्लाह का आदेश था और



अल्लाह का आदेश स्वीकार कर लेने का ही नाम इस्लाम है । इस्लाम का अर्थ ही पूर्ण समर्पण और आज्ञापालन है । दुनिया भर के मुसलमान उस दिन जानवरों की क़ुरबानी करके अल्लाह से वादा करते हैं कि हम तेरे आज्ञाकारी हैं और तेरा पूर्ण आज्ञापालन ही हमारा चलन है ।

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the society

(Q. Hoda) Chairman — *(Prof. M. B. Zaman)* Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 93 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2010-2011 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 14 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें-उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

.....में अपनी रक़म भेज सकते हैं.....

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें-THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

.....चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता.....

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKIN GA/C NO.: 300402010010581

☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

अध्यक्ष
डॉ० फ़रासत हुसैन

नाज़िम
डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

दुनिया को हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की शिक्षाओं की ज़रूरत

■ विद्या प्रकाश

संसार में मानव समाज के प्रारंभ से लेकर वर्तमान काल तक समय-समय पर विभिन्न देशों में ऐसे अनेकानेक महापुरुषों ने जन्म लिया तथा उनका आगमन हुआ जिन्होंने बुराइयों, अज्ञानता, सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक अंधविश्वासों, पाखंडों, दैन्य, दासता और मानवीय शोषण के ख़िलाफ़ निरंतर संघर्ष तथा नैतिक मूल्यों पर आधारित बेहतर समाज की स्थापना के लिए प्रयास किया । महापुरुषों की इस फ़ेहरिस्त में हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) का मक़ाम सबसे ऊंचा, अहम और महान है । राहे खुदा में अल्लाह की खुशनूदी तथा इस्लामी क़द्रों की स्थापना के लिए वे ताज़िन्दगी मुसलसल जिद्दोजेहद करते रहे और इस दौरान उनके सामने अनेक इम्तिहानी घड़ियां आयीं तथा उनके सब्र की आज़माइश की गयी मगर उनके अन्दर इतना सब्र था और इस्लाम के प्रति इतनी अगाध निष्ठा थी कि उन्होंने हर संकट का, हर मुसीबत का साहस और सब्र से मुक़ाबला किया । वे ज़िन्दगी के हर इम्तिहान-आज़माइश में कामयाब हुए ।

राहे खुदा और राहे इस्लाम में उनके द्वारा दी गयी सबसे बड़ी कुरबानी अपने प्राणाधिक प्रिय बेटे इस्माईल (अलैहि॰) की अविचलित भाव से दी गयी कुरबानी है । स्वप्न दर्शन के उपरांत अपने उसूल से तनिक भी डिगे और विचलित हुए बग़ैर वे अपने प्यारे पुत्र इस्माईल (अलैहि॰) की कुरबानी के लिए सहर्ष तैयार हो गये । तवारीख़े इस्लाम और राहे इस्लाम में हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) द्वारा बेटे की दी जाने वाली यह कुरबानी सबसे बड़ी बेमिसाल घटना है जो आगे चलकर भावी मानवीय संततियों के लिए नज़ीर बन गयी । दुनिया के किसी भी हिस्से में शायद ही किसी व्यक्ति ने इतने बड़े मक़सद की ख़ातिर इतनी बड़ी कुरबानी दी हो ।

आजकल के अर्थ प्रधान भौतिकवादी युग में हर व्यक्ति अर्थ संग्रह और विषय वासना के चक्कर में परेशान है । हर मनुष्य अपनी महत्वाकांक्षाओं, काम लिप्साओं तथा दुनियावी ख़्वाहिशात को पूरा करने के लिए चौबीसों घंटे लीन है और इसके लिए नैतिक मूल्यों की अवहेलना-उल्लंघन में उसे ज़रा भी झिझक और शर्मिन्दगी महसूस नहीं होती । उसके दिल में ज़रा भी ख़ौफ़-खुदा नहीं है । इसी कारण आज दुनिया में चातुर्दिक अशांति तथा आपराधिक घटनाओं में बढ़ोतरी है ।

दीवानी तथा कलेक्ट्रेट के न्यायालयों में थोड़ी-थोड़ी ज़मीन के लिए सहोदर भाइयों में मुक़दमेबाज़ी बढ़ी है । सियासत में वंशवाद बढ़ा है, कांग्रेस, भाजपा, सपा वग़ैरह कोई भी पार्टी ऐसी नहीं है जिसके आला नेताओं में अपने बाद अपने पुत्रों को अपना उतराधिकारी बनाने की कोशिश न दिखायी पड़ती हो । इस अशांत और दिग्भ्रमित परिस्थिति में हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की नज़ीर और मिसाल हमारे लिए अनुकरणीय, आचरणीय और व्यावहारणीय है । यदि हम उनके द्वारा प्रतिपादित एवं निर्देष्ट मार्ग पर चलें तो समाज की अनेकानेक समस्याओं का समाधान स्वयं हो जाए । उनके आदर्शों के अनुसरण से ही विश्व में शांति एवं खुशहाली की स्थापना संभव है ।

Prop : Abid Hussain
09413037652
09252235194

Shop : Mujahid Hussain
09214747172

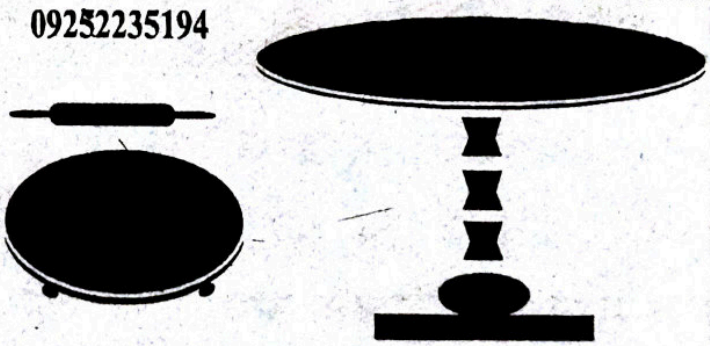

कान्ति मार्बल हैंडीक्राफ्ट

सभी प्रकार के वन पीस और ज्वाइंट पीस चकलों के निर्माता व थोक विक्रेता, मार्बल के फव्वारे तथा टेबल, टेलीफ़ोन स्टेंड, नोजल लैंप, गमले, घड़ी व फैंसी आइटम

Shop : Hotel Moti Mahal, Manglana Road, Makrana-341505
Fact : Bypass Mor, Opp : Sai Kirpa Petrol Pump, Makrana Road, Borawad (Raj.)

क़ादिरी दवाख़ाना की कामयाब यूनानी दवाएं

DIAL
033-2469-3173
033-2489-3539



किसी भी प्रकार के दर्द, चोट, मोच, गठिया, जलने, कटने और बच्चों की मालिश में बहुत ही लाभदायक।



जाफ़रानी तेल®

गैस्टिक के दर्द में?

क़ब्ज़ ट्रोजन

अनपच, भूख की कमी, जिगर का दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन और पेटी की सभी बीमारियों में बहुत ही लाभदायक।

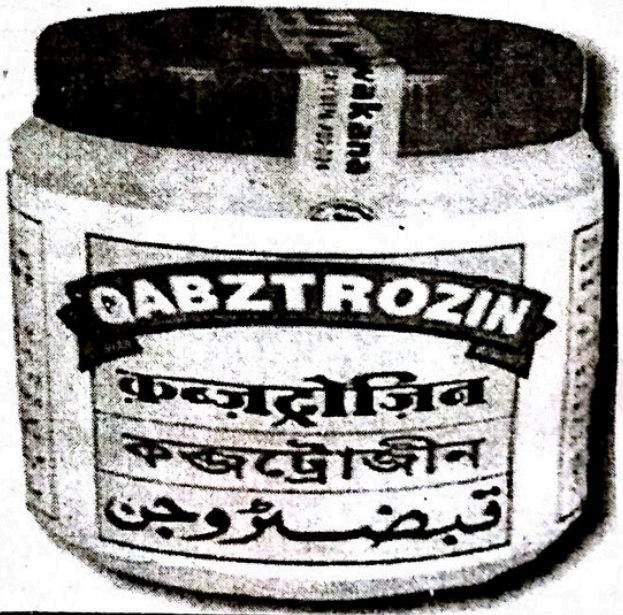

Qadri Dawakhana
B-18, NAWAB WAJID ALI SHAH ROAD, KOLKATA - 24,

DISTRIBUTORS:
DARYA BADI DAWAKHANA 393, E. R. Road, Pydhonie, Mumbai - 400 003 Ph: 022-2341-1957,

RELAX ENTERPRISES 3416, Bahishti Wada, No.1, Dhule, - 424 001 Ph: 02562-236952

राष्ट्रवाद के फॉसीवादी सरोकार

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

(गतांक का शेष)

गांधी जी का रामराज्य

गांधी ने अनेक बार कहा था कि वे भारत में रामराज्य की स्थापना करना चाहते हैं । वे राम चन्द्र जी से इतने प्रभावित थे कि मरने के पूर्व उनका अंतिम शब्द ''हे राम'' था । वे 'नवजीवन' में लिखते हैं : ''मैं अपना अनुभव सुनाता हूं । मैं संसार में व्यभिचारी होने से बचा हूं, तो राम नाम की बदौलत । ...जब-जब मुझ पर विकट प्रसंग आये हैं मैंने राम नाम लिया है और मैं बच गया हूं ।'' लेकिन वास्तव में गांधी जी रामराज्य से प्रभावित नहीं थे । वे अपने सपनों के राज्य में 'राम' शब्द ज़रूर लाना चाहते हैं, क्योंकि उनका मानना था कि ''करोड़ों हृदयों का अनुसंधान करने और उनमें ऐक्यभाव पैदा करने के लिए एक साथ राम नाम की धुन जैसा दूसरा कोई सुन्दर और सबल साधन नहीं है ।''

गांधी जी ने अपने 'रामराज्य' की जो रूपरेखा बनायी थी, उसे वे अमली जामा पहनाना चाहते थे, लेकिन ऐसा मुमकिन नहीं हो सका । इसकी वजह को गांधी जी के रामराज्य की रूपरेखा को जानकर ही मालूम किया जा सकता है। ''अणु व्रत'' (16 मई 1982) में यशपाल जैन ने गांधी जी के इस राज्य की रूपरेखा को 16 बिन्दुओं पर केन्द्रित किया है, जो यहां पेश किया जा रहा है :

1. रामराज्य स्वराज्य क आदर्श है । इसका अर्थ है धर्म का राज्य या न्याय और प्रेम का राज्य या अहिंसक स्वराज्य, जनता का स्वराज्य ।

2. जनता के स्वराज्य का अर्थ है : प्रत्येक व्यक्ति के स्वराज्य से उत्पन्न जन-सत्तात्मक राज्य । ऐसा राज्य केवल, प्रत्येक व्यक्ति का नागरिकता के नाते जो धर्म है, उसका पालन करने ही से उत्पन्न होता है ।

3. (A) इस स्वराज्य में किसी को अपने अधिकार का ख़याल तक नहीं होता । अधिकार आवश्यक होने पर खुद-ब-खुद दौड़ा चला आता है । इसमें लोगों को अपने हक़ जानने की ज़रूरत नहीं होती, पर अपना धर्म जानना और पालना आवश्यक होता है । कारण यह कि कोई कर्तव्य ऐसा नहीं है, जिसके अंत में कोई हक़ न हो और सच्चे हक़ या अधिकार तो केवल पाले हुए धर्म ही में से पैदा होते हैं ।

(B) जो सेवा-धर्म पालता है, उसी को नागरिकता का अस्ली अधिकार मिलता है और वही उसे पचा सकता है ।

(C) वैसे ही झूठ न बोलने का (अर्थात् सत्य का) और मारपीट न करने का (अर्थात् अहिंसा) धर्म पालन करने से जो प्रतिष्ठा मिलती है, वह उसे बहुतेरे अधिकार दिला देती है, और ऐसा मनुष्य अपने अधिकार का भी सेवा के लिए उपयोग करता है, स्वार्थ के लिए कदापि नहीं ।

(4) रामराज्य में एक ओर अथाह संपत्ति और दूसरी ओर करुणाजनक फ़ाक़ाकशी नहीं हो सकती । उसमें कोई भूखा मरने वाला नहीं हो सकता । उस राज्य का आधार पशुबल (ज़ोर-ज़बरदस्ती) नहीं होगा, बल्कि वह लोगों के प्रेम और समझ-बूझकर और बिना डर के दिये हुए सहयोग पर टिका रहेगा ।

(5) उसमें बहुमत या बड़ी जाति अल्पमत या छोटी जाति को नहीं दबाती, बल्कि अल्पमत भी बहुमत जैसी ही स्वतंत्रता भोगेगा और बड़ी जाति छोटी जातियों के हित की रक्षा करना अपना फ़र्ज़ समझेगी ।

(6) वह करोड़ों का और करोड़ों के सुख के लिए चलने वाला राज्य होता है । उसके विधान में जिसे मुख्य अधिकारी का स्थान मिला होगा, वह चाहे 'राजा' कहलाता हो, 'अध्यक्ष' कहलाता हो या और कुछ कहलाता हो, वह प्रजा का सच्चा सेवक होने के नाते ही उस पद पर होगा । प्रजा के प्रेम से वहां टिकेगा और उसके कल्याण के लिए ही प्रयत्न करता रहेगा । वह जनता के धन पर गुलछर्रे नहीं उड़ाएगा और अधिकार-बल से लोगों को सताएगा नहीं, किंतु राजा या उसी जैसा कहलाते हुए भी फ़क़ीर के मानिंद होगा ।

7. राम-राज्य का अर्थ है : कम से कम राज्य । उसमें लोग अपना बहुत कुछ व्यवहार परस्पर मिलकर अपने-आप चलाएंगे । क़ानून गढ़-गढ़कर अधिकारियों द्वारा दंड के भय से उनका पालन करना उनमें लगभग नहीं होगा । उसमें सुधार करने के लिए जनता धारासभा या अधिकारियों की राह देखती बैठी न रहेगी, बल्कि लोगों के चलाये सुधारों के अनुकूल पड़ने वाले ढंग से क़ानून में सुधार करने के लिए

व्यवस्थापित सभाएं और व्यवस्था करने के लिए अधिकारी प्रयास करेंगे ।

8. उसमें खेती का धंधा बढ़ती पर होगा । और दूसरे सब धंधे उसके सहारे टिकेंगे । अन्न और वस्त्र के विषय में लोग स्वाधीन होंगे और गाय-बैलों की भी समृद्ध दशा होने से आदर्श गो-रक्षा की व्यवस्था होगी ।

9. उसमें सब धर्म, सब वर्ण और सब वर्ग समान भाव से मिल-जुलकर रहेंगे और धार्मिक झगड़े या क्षुद्र स्पर्धा अथवा विरोधी स्वार्थ सरीखी चीज़ ही नहीं होगी ।

10. उस राज्य में स्त्री का पद पुरुष के समान ही होना चाहिए ।

11. उसमें कोई मनुष्य संपत्ति या आलस्य के कारण निरुद्यमी न होगा, कोई मेहनत करते हुए भी भूखों मरने वाला न होगा, किसी को उद्यान के अभाव में मजबूरन आलसी नहीं बने रहना पड़ेगा ।

12. उसमें आंतरिक कलह न होगा, और न विदेशों के साथ लड़ाई ही होगी. या उनके व्यापार-धंधे अथवा नीति को नाश करने वाली राजनीति अस्वीकृत होना चाहिए । वह दूसरे राष्ट्रों के साथ मित्र-भाव से रहेगा ।

13. अत: रामराज्य में फ़ौजी ख़र्च कम से कम होना चाहिए ।

14. उसमें लोग केवल लिख-पढ़ सकने वाले ही न होंगे, बल्कि सच्चे अर्थ में शिक्षा पाये हुए होंगे, अर्थात उन्हें ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए, जो मुक्ति देने वाली और मुक्ति में स्थिर रखने वाली हो ।

15. यह एक ही देश या जनता के लिए नहीं, बल्कि सारी दुनिया के उत्तम राज्य का आदर्श है । यदि एक जगह भी वह सिद्ध हो जाए, तो फिर उसकी छूत सारी दुनिया में फैल जानी चाहिए ।

16. यह स्थिति आने पर भिन्न-भिन्न राज्यों में झगड़े का कारण ही न रहेगा अर्थात युद्ध जैसी चीज़ ही न रह सकेगी । सारे मतभेद, विरोध, झगड़े अहिंसक मार्ग से ही निबटा करेंगे ।

गांधी जी अपने रामराज्य को मौक़ा पाकर भी नहीं लागू करा सके । यह ज़रूर है कि कांग्रेस पार्टी ने उस वक़्त रामराज्य का नाम लेना शुरू किया था, जब राजीव गांधी के नेतृत्व में वह थी । इसका कारण भाजपा का 'राम-प्रेम' बताया जाता है, जिसके तोड़ के लिए कांग्रेस ने रामराज्य का नाम लिया था, लेकिन इस राज्य का विवरण नहीं दिया गया । भाजपा जब-तब रामराज्य की तरफ़ जनता को ले जाने का नारा तो बुलंद करती है, पर यह राज्य कैसा होगा ? उसके क्या ज़ाब्ते और क़ानून होंगे, आदि बातें नहीं बतायी जा रही हैं । इसकी वजह साफ़ है । अगर वह मनुस्मृति के अनुसार काम करेगी, तो रामराज्य की बात कैसी ?

हिन्दू-राष्ट्र

हिन्दू राष्ट्र को क़ायम करने के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बानी डॉ॰ केशवराव हेडगेवार ने सबसे पहले आन्दोलन शुरू किया था । राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना के पहले इस दिशा में कुछ कोशिशें ज़रूर हुई थीं । हिन्दू राजाओं के शासन को हिन्दू राष्ट्र नहीं कहा जा सकता है। लेकिन मराठे हिन्दुत्व के नाम पर ज़रूर हुकूमत करते थे । इसी वजह से शायद हेडगेवार जी शिवाजी की हुकूमत से बहुत प्रभावित थे । उन्होंने आर॰एस॰एस॰ के उत्सवों में छठा उत्सव 'हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव' जोड़ा । यह शिवाजी की जयंती (जन्म दिन) पर मनाया जाता है । तिलक ने शिवाजी की जयंती का उत्सव हिन्दू चेतना के लिए शुरू किया था । हैडगेवार जी ने इसे अपने उत्सवों में शामिल करके अपना राष्ट्रीय लक्ष्य पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया । 9 जून 1940 को उन्होंने कहा था : "मैं अपनी आंखों के सामने हिन्दू राष्ट्र का छोटा रूप देख रहा हूं ।" (संघ-वृक्ष के बीज डॉ॰ केशव राव हेडगेवार) लेकिन वे इसकी तफ़्सील में ज़्यादा नहीं गये कि हिन्दूराष्ट्र का कैसा स्वरूप होगा और उसकी कैसे स्थापना की जाएगी ?

यह तथ्य भी है कि आर॰एस॰एस॰ की स्थापना के शुरू से ही लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठोर फॉसीवादी रवैया इख़्तियार किये जाने की बात थी । J. A. Curran किताब "Militant Hinduism in Indian Politics" (A Study of the R.S.S.) के अनुसार, लेकिन सरकारी दबाव के चलते आर॰एस॰एस॰ के संविधान के Article 3 में यह प्रावधान किया गया कि "संघ का Aims और Objects हिन्दू समाज के विभिन्न वर्गों के बीच पारस्परिक एका पैदा करना और अपने धर्म और संस्कृति के आधार पर उन्हें पुनर्जीवन और नवजीवन प्रदान करना है, ताकि भारतवर्ष का चहुंमुखी विकास हो सके ।" (पृष्ठ 35) Curran ख़ुद कहते हैं कि हिन्दू राष्ट्र के लिए एक उग्र और असहिष्णु रवैये का संकेत

आर०एस०एस० के संविधान से नहीं मिलता । संविधान द्वारा अपनाये गये औपचारिक उद्देश्यों और संघ की वास्तविक योजनाओं में बुनियादी फ़र्क़ है । (वही)

गोलवलकरजी की कोशिशें

आर०एस०एस० फॉसीवादी राह पर उस वक़्त तेज़ी से बढ़ा, जब आर०आर०एस० के दूसरे सरसंघ संचालक (सर्वोच्च नेता) माधव सदाशिव गोलवलकर (गुरुजी) की 1939 में "We or Our Nationhood Defined" नामक 77 पेज की पुस्तिका प्रकाशित हुई । यहां इस विवाद में नहीं पड़ना चाहिए कि यह पुस्तिका वी०डी० सावरकर के भाई बाबा राव जी०डी० सावरकर की मराठी किताब 'राष्ट्र मीमांसा' का अनुवाद है या नहीं । गोलवलकर जी 1940 में आर०एस०एस० के सरसंघ संचालक बने और 1973 तक इसी पद पर बने रहे । उन्होंने न केवल Saffron Brigade (केसरिया वाहिनी) बनवाने में प्रभावकारी भूमिका निभायी, बल्कि अभीष्ट हिन्दू राष्ट्र के बुनियादी ढांचे की स्थापना के सिलसिले में कुछ उसूल तय किये, जिनमें ख़ास यह था कि "हिन्दुओं की भूमि पर हिन्दू राष्ट्र ही होना चाहिए और सिर्फ़ वे ही आन्दोलन वास्तव में राष्ट्रीय हैं जिनका उद्देश्य हिन्दू राष्ट्र को वर्तमान जड़ता से उबारकर पुन: सशक्त करना है, बाक़ी सब राष्ट्रहित के लिए घातक हैं ।"

यही वह वजह रही, जिसने आर०एस०एस० को स्वतंत्रता आन्दोलन का अघोषित तौर पर बहिष्कार करने पर आमादा किया और स्वतंत्रता संघर्ष का कभी-कभार विरोध भी करवाया । इसका कारण Walter K. Andersen और Shridhar D. Damle ने "The Brotherhood in Saffron" नामक किताब में विस्तृत रूप से बताया है । इस किताब में बताया गया है कि इसके नतीजे में ब्रिटिश से आर०एस०एस० को रियायतें मिलीं । नानाजी देशमुख तक भी यह सवाल उठाते हैं कि "आर०एस०एस० ने एक संगठन के तौर पर स्वतंत्रता संघर्ष में भाग क्यों नहीं लिया ?"

(Victim of Slander, 1979, Page 29)

गांधी जी की हत्या के बाद आर०एस०एस० पर पाबन्दी लगा दी गयी । यह पाबन्दी 4 फ़रवरी 1948 से 12 जुलाई 1949 तक लगी रही । गोलवलकर जी के प्रयासों से यह पाबन्दी हट भी गयी । इस पर भी उन्होंने सितम्बर 1949 में भारतीय संविधान को 'भारत विरोधी' बताया, क्योंकि वे जो हिन्दू राष्ट्र चाहते थे, उसका निर्माण जनसमर्थन के अभाव में नहीं हो सका था ।

गोलवलकर जी ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विश्व हिन्दू परिषद का 1964 में गठन करवाया । इसका उद्देश्य विदेशों में रह रहे हिन्दुओं को तहरीक से क़रीब लाना भी था । इसके पहले महासचिव बनाये गये थे आर०एस०एस० प्रचारक शिवराम शंकर आप्टे । आर०एस०एस० हिन्दू राष्ट्र के लिए तरह-तरह की नीतियां और कार्यक्रम बनाता और उसे अमल में लाता रहा, लेकिन इस राष्ट्र के स्वरूप के बारे में वह मौन है । केवल नारे तक ही बात सीमित है ।

राष्ट्र की मुख्यधारा

आधुनिक हिन्दुत्व अपना सबसे बड़ा दुश्मन इस्लाम और मुसलमानों को मानता है । ज़ाहिर है जो दुश्मन है, वह अपना कैसे बनेगा ? राष्ट्रीयता की कसौटी पर एक बार एक अमेरिकी प्रोफ़ेसर ने गोलवलकर जी से प्रश्न किया : मुस्लिम और ईसाई इसी देश के हैं, तब आप उन्हें अपना क्यों नहीं मानते ?

इसके उत्तर में गोलवलकर जी ने प्रोफ़ेसर से एक प्रश्न किया : "मान लीजिए हमारे देश का एक नागरिक अमेरिका जाता है और वहीं वह स्थायी रूप से रहने लग जाता है । उसे अमेरिकी नागरिकता तो चाहिए, किंतु वह अब्राहम लिंकन, जार्ज वाशिंगटन, जैफ़रसन आदि को राष्ट्र-पुरुष मानने के लिए तैयार नहीं है । ऐसे व्यक्ति को क्या आप अमेरिका का राष्ट्र-घटक मानेंगे ?"

प्रोफ़ेसर ने फ़ौरन जवाब दिया : नहीं । इस पर गोलवलकर जी ने कहा : "हमारे देश में भी अगर यही कसौटी लगायी जाए, तो उसमें क्या ग़लती होगी ? इस देश के वीर पुरुषों को, राष्ट्रगीतों को, जो नहीं मानते उन्हें हम अपना क्यों कहें ? मानसिक निष्ठा ही को संपूर्ण जगत में राष्ट्रीयता की सर्वमान्य कसौटी माना गया है ।"

("राष्ट्र धर्म", मई 1984 ई०, पृ० 32)

गोलवलकर जी तो ग़ैर हिन्दुओं को नागरिकता देना ही नहीं चाहते थे, लेकिन कुछ लोग उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा में ज़रूर लाना चाहते हैं । सवाल यह है कि यह धारा कौन-सी है और इसकी प्रकृति क्या है ? वास्तव में यह भी हिन्दू राष्ट्र और रामराज्य की तरह जनता को भ्रमित करने के लिए गढ़ा गया नारा है । मेरे ख़याल से यह हिन्दुत्व की छद्म चाल है । और चाल तो वही कारगर होती है जो छिपकर चली जाए—यह धारा और कुछ नहीं, बस हिन्दुत्व की धारा

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ समोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

जामिया का बैंक खाता नं॰

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

है । हिन्दुत्व की मीडिया इस धारा में अक्सर रंगी हुई नज़र आती है ।

यह चाल कभी ऐलानिया भी होती है । यह उस वक़्त नुमायां होती है जब संघ परिवार की तरफ़ से कभी कहा जाता है कि 'मुसलमान ख़ुद को मुहम्मदी हिन्दू कहें । मुसलमान यहां रहना चाहते हैं, तो उन्हें स्वयं हिन्दू धर्म स्वीकार कर लेना चाहिए । और कभी यह बात कही जाती है कि 'इस देश में आप गर्व के साथ अपने को हिन्दू नहीं कह सकते । आज भी मुसलमानों का राज है । इसी तरह कभी ऐसा बयान आता है कि 'हम मंदिर बनाएंगे, हम मस्जिद ढहाएंगे ।' कभी यह कहा जाता है कि 'मस्जिद ढहाया जाना दुर्भाग्यपूर्ण तो है, पर शर्मनाक नहीं । यह दुर्भाग्यपूर्ण है, क्योंकि मुसलमानों ने इसे स्वेच्छा से नहीं छोड़ा और इसे टूटना ही था । मगर यह हिन्दू-गौरव की बात है ।'

इसी तरह के और जो वाक्य प्राय: कहे जाते हैं, वे इस प्रकार हैं : 'मुसलमान अधिक बच्चे पैदा करते हैं । उनकी जबरन नसबन्दी की जाए', 'मुसलमानों को वोट बैंक बना दिया गया है, उनका मताधिकार छीन लेना चाहिए ।' 'मुसलमान भाजपा-शासित राज्यों में सुरक्षित हैं, भाजपा को वोट दो, नहीं तो दंगे झेलो', 'भारत धर्मनिरपेक्ष देश है, क्योंकि यहां हिन्दू बसते हैं' आदि-आदि । ऐसी उलटबांसियां करनी संघ परिवार की आदत बन चुकी है ।

राष्ट्र की मुख्यधारा के साथ ही 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' और 'राष्ट्रीय धर्म' जैसे शब्द भी हवा में गर्दिश करते रहते हैं । ये भी आधुनिक हिन्दुत्व के शब्द हैं । इनकी प्रकृति भी उग्र हिन्दुत्व की प्रकृति है, जो कि मीडिया के ज़रिये परवान पाती रहती है ।

हिन्दू राष्ट्र का स्वरूप

जैसा कि पहले आ चुका है कि हिन्दुत्व हिन्दू राष्ट्र का नाम तो लेता है, लेकिन उसके स्वरूप की जब बात आती है, तो ख़ामोशी इख़्तियार कर लेता है । पिछले कुछ वर्षों में हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के लिए जारी अभियान के तहत ऐसे राष्ट्र की बात करने वालों के ज़ुबान से यक़ीनन कुछ न कुछ तथ्य निकले हैं, जिन्हें जोड़कर हिन्दू राष्ट्र का पूरा नहीं तो अधूरा स्वरूप अवश्य बनाया जा सकता है । हम बयानों और बातों के आधार इस शीर्षक के तहत इस राष्ट्र का कुछ स्वरूप अवश्य बनाने की कोशिश करेंगे ।

हिन्दू चिंतक बलराम मधोक अपनी पुस्तक 'हिन्दू राज्य' में लिखते हैं : ''हिन्दू राजा राज्याभिषेक के समय जो शपथ लेता और प्रार्थना करता है, उसका सार है–'मेरे राज्य के सभी लोगों का कल्याण हो और राजा के रूप में धर्मानुसार आचरण करूं । मेरे राज्य में गऊ सुरक्षित हो, ब्राह्मण निश्चिंत हो और संसार के सभी लोग सुखी हों ।' शपथ में गो और ब्राह्मण का विशेष उल्लेख महत्वपूर्ण है । डी॰ मेल और डॉ॰ ज़करिया ने 'वीकली' में छपे अपने लेख में यह आपत्ति भी की है कि हिन्दू राज्य में गोवध पर रोक लगा दी जाएगी और जात-पांत को बढ़ावा मिलेगा ।''

(पृ॰ 97)

प्रस्तावित हिन्दू राष्ट्र के अस्ली स्वरूप के बारे में आधिकारिक तौर पर तो कुछ नहीं बताया गया है । परंतु ख़ास तौर से आर॰एस॰एस॰ और भाजपा से जुड़े नेताओं और साधु-संतों के जब-तब दिये गये बयानों या कही गयी बातों से हिन्दू राष्ट्र का एक स्वरूप ज़रूर उभरता है । आर॰एस॰एस॰ के विचारक बताते हैं कि हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा पश्चिमी देशों की क्षेत्रीय सीमाओं और राजनैतिक राज्य की परिभाषा से बिल्कुल अलग है । आर॰एस॰एस॰ के विचारक सूर्य नारायण राव कहते हैं : ''हिन्दुत्व धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अवधारणा है ।''

गोविन्दाचार्य के नज़दीक हिन्दू राष्ट्र की परिभाषा इस प्रकार है : ''हिन्दू राष्ट्र में हम पूजा-अर्चना की सभी विधियों का आदर करेंगे, लेकिन हम सभी हिन्दू कहलाएंगे–चाहे आर्य समाजी हो, सनातनधर्मी, मुसलमान-हिन्दू या ईसाई-हिन्दू । हमारे देश में पहले ही अनगिनत देवता हैं, उनमें अल्लाह और यीशु का नाम जुड़ने से हमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा ।''

भाजपा नेता और विचारक के॰आर॰ मल्काणी के अनुसार ''संविधान में सिर्फ़ मामूली तब्दीली होगी । अल्पसंख्यकों के ख़िलाफ़ पक्षपात करने वाले अनुच्छेदों और क़ानूनों को हम ख़त्म करेंगे । सबके लिए एक-सी नागरिक संहिता (Common Civil Code) होगी । इतिहास को भी नये सिरे से लिखने की ज़रूरत है । राष्ट्रीय ध्वज शायद भगवा रंग का हो और राष्ट्रीय गान वेदों से हो । लेकिन ये सब मेरे निजी विचार हैं ।'' भाजपा के सुन्दर सिंह भंडारी के अनुसार विदेशी प्रभुत्व वाले चिन्ह मिटने चाहिए । ये बयान 'इंडिया टुडे' (हिन्दी), 15 फ़रवरी 1993 से उद्धृत किये गये हैं ।)

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

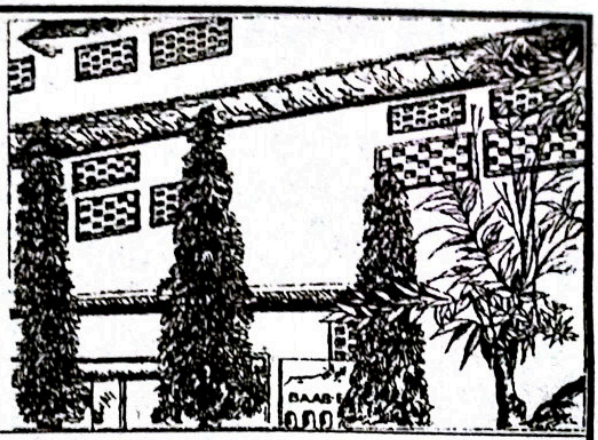

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा ● 24 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई० से 2010 ई० तक 63 अनाथ बच्चियों और 37 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 13 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 73000/- रुपये ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से ''मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

.....पता.....

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA

☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

BANK A/C NO.: 7752 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

संस्थापक महासचिव

इक़बाल अहमद ख़ां

संघ परिवार से जुड़े लोग तो कई साल से संविधान में आमूल परिवर्तन करने की मांग कर रहे हैं, क्योंकि यह उन्हें 'हिन्दू विरोधी' लगता है । संघ परिवार से जुड़े साधु, नेता कभी तो मनुस्मृति को धरती पर उतारने का इरादा जताते हैं, तो कभी उस 'सनातन व्यवस्था' को पुनर्जीवित करने का संकल्प दोहराते हैं, जिसमें दलितों (शूद्रों) की छाया से भी परहेज़ किया जाता था । यह चर्चा भी होती रही है कि अगर उनकी पार्टी केन्द्र में अपने बलबूते पर सत्ता में आयी, तो वह मनुस्मृति के अनुसार काम करेगी, लेकिन भाजपा की तरफ़ से बार-बार यही कहा जा रहा था कि उसका इरादा धर्म पर आधारित राज्य की स्थापना नहीं है । भाजपा का मनुस्मृति के अनुसार काम करने का मतलब साफ़ है कि औरतों, पिछड़ों और हरिजनों को न सिर्फ़ सत्ता से अलग रहना पड़ेगा, बल्कि उनका दर्जा पशुओं की श्रेणी में आ जाएगा । 'शूद्र, पशु और नारी' एक माने जाएंगे ।

क्या संघ परिवार ही हिन्दू राष्ट्र के निर्माण के लिए अग्रसर है ? नहीं, बल्कि आर्य समाज के लोग भी मतभेद के बावजूद संघ परिवार के राष्ट्र-लक्ष्य से जुड़े हैं। अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति का एक उभरा हुआ नारा है : "भारत को हिन्दू गणतंत्र घोषित करने का संकल्प लीजिए ।" "हिन्दू जागो, देश बचाओ ।" अखिल भारतीय हिन्दू कल्याण समिति भी इससे पीछे नहीं है । इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आर्य समाज की पत्रिका "जन ज्ञान" (मासिक) की संपादक पंडिता राकेश रानी ने तो हिन्दू नवयुवकों से कृष्ण के नाम पर संगठित होकर सेना सजाने की अपील की थी और ये दस प्रतिज्ञाएं करने के लिए कहा था :

"1. हम भारत में एक भी मुस्लिम विश्वविद्यालय नहीं बनने देंगे ।

2. तिरंगे झंडे का अपमान नहीं होने देंगे ।

3. एक भी हिन्दू यवन (मुसलमान), ईसाई नहीं हो पाएगा ।

4. साम्प्रदायिक शक्तियों-विभाजक देशद्रोही तत्वों को समाप्त करने के लिए प्राण देकर भी संघर्ष करेंगे।

5. दंगे करने वालों को पूरे बल से कुचलेंगे ।

6. भारत को हिन्दू गणराज्य घोषित कराएंगे ।

7. ओउम् ध्वज सर्वत्र फहराएंगे ।

8. भारत मां का मस्तक नहीं झुकने देंगे ।

10. विदेशी आक्रमणकारियों को, सेना-पुलिस में आरक्षण चाहने वालों को देशद्रोही समझेंगे और उन्हें समाप्त करेंगे ।

ये 10 प्रतिज्ञाएं जो ले सकें, वे हमारे साथ आएं । जो सेक्युलरिज़्म के गीत गाते हों, वे चूड़ियां पहन लें ।"

(जनज्ञान, जुलाई-अगस्त, 1982, पृ॰ 32)

इन सब बयानों और बातों से प्रस्तावित हिन्दू राष्ट्र का जो कुछ स्वरूप बनता है, वह इस प्रकार है :

(1) सभी धार्मिक समुदायों और समूहों के आगे 'हिन्दू' शब्द जुड़ा होगा ।

(2) संविधान नया बनेगा जिस की बुनियाद ऊंच-नीच की होगी और जिससे वर्ण-व्यवस्था को मज़बूती प्रदान की जाएगी। गोवध पर रोक होगी ।

(3) शूद्र, पशु और नारी एक समान माने जाएंगे ।

(4) सारे काम धर्म का नाम लेकर होंगे ।

(5) राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गान बदलेंगे ।

(6) अल्पसंख्यकों को मिली रियाअतें ख़त्म होंगी । इससे वे द्वितीय श्रेणी के नागरिक बन जाएंगे ।

(7) नया मुस्लिम विश्वविद्यालय नहीं बनेगा । अल्पसंख्यकों की सभी संस्थाएं बन्द हो सकती हैं ।

(8) विदेशी प्रभुत्व वाले चिन्ह ख़त्म किये जाएंगे, अर्थात् मस्जिदें आदि ढहा दी जाएंगी ।

(9) समान नागरिक संहिता लागू की जाएगी ।

(10) हिन्दुत्व की रक्षा के लिए सभी संभव क़दम उठाये जाएंगे, आदि-आदि ।

हिन्दू राष्ट्र का भविष्य

ज़ाहिर है इस तरह का स्वरूप वाला हिन्दू राष्ट्र अगर बना भी, तो स्थायित्व नहीं प्राप्त कर सकता । दूसरे हिन्दुत्व की इस 'आदर्श शासन-व्यवस्था' को अमली जामा भी नहीं पहनाया जा सकता, क्योंकि इसकी धारणा ही भ्रांतिपूर्ण है । भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर के शब्दों में "हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा ही भ्रांतिपूर्ण है । आप हिन्दू धर्म को अनुशासनबद्ध नहीं कर सकते । इसका न तो कोई सुप्रीम चर्च है, न कोई एक सर्वमान्य ग्रंथ या एक धर्मगुरु । किसी व्यक्ति को इस धर्म से बहिष्कृत नहीं किया जा सकता । भाजपा हिन्दुत्व को संकीर्णतावादी बना रही है ।"

वास्तव में हिन्दुत्व की ऐसी व्यवस्था की सोच से बुद्धिजीवी वर्ग भी चिंतित रहा है और अब भी है । जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे के शब्दों में "क्या वह चाहते हैं कि वह युग फिर से आ जाए, जब पवित्रतम जातियों से संबंध

रखने वाले मांस खाते थे और शराब पीते थे ? क्या वह उस समय को वापस लाना चाहते हैं जब साल भर पशुओं की बलि दी जाती थी और कभी-कभी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मनुष्य की भी बलि चढ़ा दी जाती थी ? क्या वह उस दौर को वापस लाने के इच्छुक हैं जब दस प्रकार के बेटे और आठ प्रकार के विवाह होते थे, जिनमें नारी को बलपूर्वक पकड़ ले जाना भी शामिल था ? क्या वह शाक्त वाम-पूजा फिर आरंभ करना चाहते हैं जिसके नाम पर रंगरेलियां की जाती थीं ।''

इस हिन्दू राष्ट्र से साम्प्रदायिक सद्भाव और भी बिगड़ेगा–इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं है । कांग्रेस के दिवंगत वरिष्ठ नेता श्री अर्जुन सिंह ने तो इससे थोड़ा आगे बढ़कर कहा था : ''ऐसा राष्ट्र थोपने के प्रयास से देश टूटेगा ही । भाजपा यह बख़ूबी जानती है, लेकिन वोट के लिए वह ऐसा ख़ूनी व्यापार करने को तैयार है ।'' एक बात यह भी सुनायी पड़ती है कि भारतीय शासन-व्यवस्था तो हिन्दुओं के हाथ में है ही, फिर हिन्दू राष्ट्र की क्या ज़रूरत ? जार्ज फर्नांडीस कुछ ऐसा ही पूछते हैं : ''क्या हमारे देश में हिन्दू प्रधानमंत्री और हिन्दू राष्ट्रपति नहीं हैं ? क्या सभी महत्वपूर्ण संस्थानों पर हिन्दुओं का नियंत्रण नहीं है ?''

स्वाभाविक रूप से हिन्दू राष्ट्र से सबसे अधिक चिंतित और आशंकित अल्पसंख्यक और दलित हैं । एक मुस्लिम इतिहासकार (जिनका नाम लिखने की ज़रूरत नहीं है) कहते हैं : ''ऐसा हिन्दू राष्ट्र मुझे मंजूर नहीं । यह धर्मनिरपेक्ष व्यवस्था को गहरा आघात होगा ।'' दलित नेता भी इस व्यवस्था को ठुकरा चुके हैं । इस सिलसिले में दलित नेताओं के बयान अख़बारों और पत्रिकाओं में आते रहते हैं । जनता दल के पूर्व सांसद शुकदेव पासवान जी ने कहा था : ''ये लोग हिन्दुत्व की बात करते हैं । हिन्दू राष्ट्र का इनका सपना है । इनके हिन्दू राष्ट्र में देश के दलित की, देश के आदिवासी की क्या जगह होगी, ये बताएं ? संघ परिवार का दर्शन तो शोषण की बुनियाद पर टिका है । ये लोग शोषण करने वाली ब्राह्मणवादी व्यवस्था के पोषक हैं, जिसने इस देश के तीन-चौथाई लोगों को गुलामी की स्थिति में रखा है । यह बात दलित समुदाय को ख़ासतौर पर याद रखनी चाहिए । ...आज ग़रीब की लड़ाई रोटी की है, आवास की है, तब संघ परिवार उसे राम के नाम पर बहका रहा है । राम के नाम पर एक भाई को दूसरे भाई से लड़वाया जा रहा है । अरे, यह कौन-सा धर्म है ।''

पासवान जी कहते हैं : ''इनके कुछ साधु मनुस्मृति की दुहाई दे रहे हैं । इसी से इनके ख़तरनाक इरादों को समझा जा सकता है । मनु-सोच एक शोषणकारी व्यवस्था की सोच है । इसी दर्शन के आधार पर श्रम करने वालों को गुलाम बनाया गया था । आज जब ग़रीब भी अपने हक़ के लिए खड़ा हो गया है, तो संघ परिवार जैसी शक्तियां धर्म और परंपरा के नाम पर उसे फिर शोषणकारी चक्र में फंसाने की कोशिश में हैं । ...दलितों की इतनी बड़ी आबादी को ज़्यादा दिन मूर्ख नहीं बनाया जा सकता ।'' उपर्युक्त सारे वक्तव्य 'संडे मेल' साप्ताहिक, 14-20 नवम्बर 1993 और 'इंडिया टुडे' (हिन्दी), 15 फ़रवरी 1993, पृ॰ 45,46 से उद्धृत किये गये हैं ।)

दरअस्ल, हिन्दू राष्ट्र जैसे नारे के पीछे कोई सकारात्मक सोच नहीं है, बल्कि यह हिन्दुत्व के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दिया गया, एक लुभावना, जो भ्रामक शब्द है, जिसे अभियान या आन्दोलन का रूप दिया जा रहा है । उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दू राष्ट्र की कोई ऐसी धार्मिक पृष्टभूमि नहीं है, जिसकी बुनियाद पर आधुनिक समाज में किसी सभ्य राष्ट्र का निर्माण हो सके । रहा हिन्दू राष्ट्र तो वह सिर्फ़ हिन्दुत्व ही का राष्ट्र हो सकता है, जिसकी अस्ल बुनियाद मनपसन्द और मनगढ़ंत और भ्रामक बातों के सिवा और क्या है ? निश्चित रूप से प्रस्तावित हिन्दू राष्ट्र भी भ्रामक और मनगढ़ंत है । अतएव इसका भविष्य भी भ्रामक और अविश्वसनीय ही होगा ।

'सदाकांक्षा' 2011

'सदाकांक्षा' (2011) का अगला अंक विभिन्न विधाओं पर केन्द्रित होगा। रचनाकार बन्धुओं से निवेदन है कि विभिन्न विधाओं पर अपनी पांच उत्कृष्ट रचनाएं संक्षिप्त जीवन परिचय के साथ 30 दिसम्बर 2011 तक निम्नलिखित पते पर भिजवाने का कष्ट करें। 'सदाकांक्षा' के निरंतर प्रकाशन के लिए हमें आपका भरपूर सहयोग अपेक्षित है।

संपादक, 'सदाकांक्षा'
इस्लामी साहित्य संगम
2703, बारादरी, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
ई-मेल : sadakanchha2004@rediffmail.com

इतना आसान नहीं है उपभोक्ता मंच से शिकायत का समाधान पाना

■ एम॰ ए॰ राही

'...दुकानदार ने बेईमानी की, चिंता की कोई बात नहीं, उपभोक्ता मंच है ना। बस सादे काग़ज़ पर एक अर्ज़ी लिख उपभोक्ता मंच में विश्वास पेश करो मामूली फ़ीस भरो और हो गया काम। ना वकील की ज़रूरत है और न ही लंबा इन्तिज़ार।'

'जागो ग्राहक जागो' के इस तरह के नारों से ग्राहकों का जगाने के तो लाख प्रयास किये जा रहे हैं, लेकिन ज़मीनी हक़ीक़त इसके बिल्कुल उलट है। ग्राहक जागने के बाद भी कुछ ख़ास कर पाने की स्थिति में नहीं रहता, क्योंकि क़दम-क़दम पर बिखरी क़ानूनी पेचीदगियां उसे इस क़दर उलझा देती है कि हक़ पाने की ख़्वाहिश दम तोड़ देती है। लुभावने नारों में लाख कहा जाए कि उपभोक्ता मामलों में वकील की ज़रूरत नहीं है, लेकिन हक़ीक़त कुछ और ही है।

केस दायर करना ही पेचीदा

उपभोक्ता मामलों के तीन स्तरीय फ़ोरम है। पहला ज़िला उपभोक्ता मंच होता है जो ज़िला स्तर पर गठित हैं। इसके बाद राज्य स्तर पर राज्य आयोग है और इनके ऊपर राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय आयोग बना हुआ है। सुनवाई तो दूर की बात है, इन उपभोक्ता फ़ोरम में केस पेश करने का प्रोसेस ही इतना पेचीदा है कि आम आदमी परेशान हो जाता है।

ज़िला मंच

सबसे पहला काम परिवाद तैयार करने का है। विवाद उत्पन्न होने के दो साल के भीतर परिवाद हो जाना चाहिए। परिवाद के साथ तीन प्रति मंच के लिए चाहिए। इसके अतिस्क्ति जितने विपक्षी पक्षकार हैं उनके लिए एक-एक प्रति प्रस्तुत करनी होगी। इसके साथ शपथ पत्र व साक्ष्य के तौर पर अलग शपथ पत्र पेश करने होते हैं। फिर वह दस्तावेज़ जिस पर उपभोक्ता निर्भर करता है। इन दस्तावेज़ों की प्रतियां भी पेश करती होती है। यह सभी एक फाइल कवर में लगाकर देने होते हैं। अब फीस की बात करें तो एक लाख तक अनुतोष के लिए सौ रुपये, पांच लाख तक दो सौ रुपये दस लाख तक चार सौ रुपये और इसके बाद बीस लाख तक पांच सौ रुपये फीस अदा करनी होती है।

राज्य आयोग

परिवाद पेश करने की वही प्रक्रिया है जो ज़िला मंच की होती है। लेकिन अपील पेश करनी हो तो अपील के साथ इन्डेक्स, शपथपत्र, लिमिटेशन की अर्ज़ी (ज़रूरत के अनुसार), स्टे की अर्ज़ी उसके साथ शपथ पत्र, मंच का आदेश, प्रोसिडिंगस की कॉपी (ज़रूरत के अनुसार), कोई और दस्तावेज़, इसके अलावा इनके तीन सेट बनाकर देने होते हैं। तीन सेट फाइल कवर भी पेश करने होते हैं। अपील में एडमिशन पर बहस होती है, प्राथमिक स्तर पर अपील सुनने योग्य पायी जाती है तो स्टे भी दिया जा सकता है, नोटिस जारी होता है फिर रिकार्ड तलब होता है।

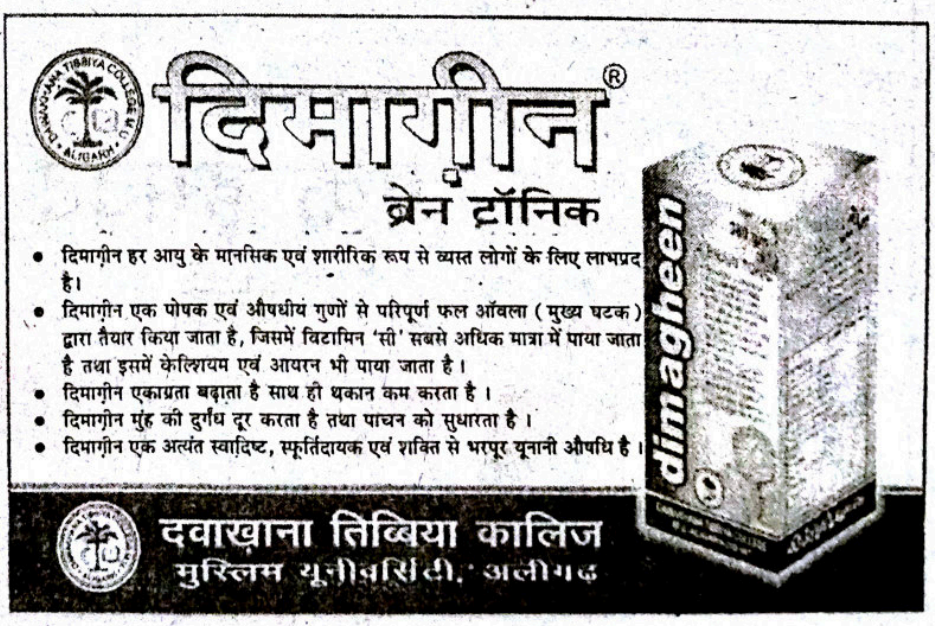

क़ुरआन

यह (क़ुरआन) मानव के लिए स्पष्ट संदेश है और इसलिए भेजा गया है ताकि उन्हें इसके द्वारा सचेत कर दिया जाए और ताकि वे जान लें कि वह केवल अकेला 'इलाह' (पूज्य) है ताकि बुद्धि रखने वाले ध्यान दें। (क़ुरआन, 14:52)

यह किताब केवल मुसलमानों के लिए हीं नहीं बल्कि सारे मानव जाति के लिए है। चाहे वह हिन्दू, ईसाई, यहूदी, बौद्ध, सिख, पारसी, जैन या अन्य किसी भी धर्म या जाति का हो, सभी के लिए मार्गदर्शक है।

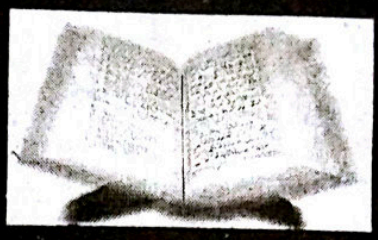

Taleemul Islam
A Call to Islam

दु.क्र. 2/25, मातीवाला बिल्डिंग,
पठाणवाडी, पिरू लेन, मुंबई-09
फ़ोन : 23726454/65128939
मोबाइल : 9833341421

हम आपको क़ुरआन की प्रति और उसकी CD(English/Hindi/Marathi/Gujrati) भाषा में बिना मूल्य देने की इच्छा रखते हैं।

"हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : सबसे बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने बाप के दोस्तों के साथ अच्छा सलूक करे।" (मुस्लिम)

एक हमदर्द

मुंबई

राष्ट्रीय आयोग

राष्ट्रीय आयोग में तो आम आदमी का ख़ुद पैरवी करना दूर की कौड़ी ही है । एक तो सारी कार्रवाई अंग्रेज़ी में ही की जाती है । फिर अपील के अलावा विविध अर्ज़ी व शपथ पत्र, रिविजन पिटीशन और स्टे अर्ज़ी, ट्रांसफ़र अर्ज़ी, रिव्यू अर्ज़ी, प्रथम अपील और केवियट भी दायर होती है । इनको पेश करने की क़ानून के तहत निश्चित समयावधि है और प्रोसेस भी है ।

एक क़ानून में इतने क़ानून

1986 में देश में उपभोक्ता क़ानून इस उम्मीद के साथ लागू हुआ था कि इस सरल क़ानून से उपभोक्ताओं का कल्याण होगा और उनको उस व्यवसायी वर्ग के शोषण से मुक्ति मिलेगी जिसका वह क़दम-क़दम पर शिकार होते हैं । लेकिन अब यह क़ानून अकेला नहीं है इसके साथ कई दूसरे क़ानून जुड़ गये हैं । इनमें मुख्य रूप से सिविल प्रक्रिया संहिता, बीमा एक्ट, संविदा अधिनियम, साक्ष्य अधिनियम, एम०वी० एक्ट, कैरियर एक्ट, पोस्ट एंड टेलीग्राफ़, आर्बिट्रेशन एक्ट, लिमिटेशन एक्ट, यू०आई०टी० एक्ट, राजस्व क़ानून समेत कई दूसरे क़ानून के प्रावधान की भी ज़रूरत पड़ सकती है । इसके बाद नम्बर आता है नज़ीरों का । विभिन्न राज्य के आयोगों और राष्ट्रीय आयोग द्वारा तय किये मामले जो अब नज़ीर बन चुके हैं वे किताकों की शक्ल में वकीलों के ऑफ़िस में उपलब्ध है । लेकिन आम आदमी इन नज़ीरों तक नहीं पहुंच सकता है और पहुंच भी जाए तो नज़ीर खोजना उसके बस की बात नहीं होती ।

यहां भी...तारीख़ पर तारीख़...

उपभोक्ता क़ानून में नब्बे दिन के भीतर प्रकरण निबटारे का प्रावधान है, लेकिन हक़ीक़त इसके विपरीत है । आम आदमी अगर ख़ुद पैरवी करने आये तो तारीख़ पेशियों पर ही उसका दम फूल जाता है । पहले मुक़दमा एडमिट कराने की मशक़्क़त फिर नोटिस के बाद विपक्षी पेश हो जाता है तो जवाब का इन्तिज़ार और फिर बहस के लिए एक के बाद एक तारीख़ मिलती जाती है । इस बीच अगर विपक्षी ने कोई अर्ज़ी दायर कर दी तो यह कोढ़ में खाज का काम करती है यानी सुनवाई में और देरी तय है । ऐसे में व्यक्ति उस पल को कोसने लगता है जब उसने मामले की ख़ुद पैरवी करने का निर्णय किया होता है ।

बस लुभावने है विज्ञापन !

वरिष्ठ एडवोकेट एवं उपभोक्ता मामलों के जानकार श्री सूर्य प्रकाश गांधी का कहना है कि उपभोक्ताओं को जगाने के लिए बड़े पैमाने पर किये जा रहे इस तरह के विज्ञापन लुभावने तो है लेकिन हक़ीक़त से परे हैं । हालत यह है कि छोटे-छोटे मामलों में भी नज़ीरें पेश किये बिना नहीं चलता । अब मंचउपभोक्ताओं के कल्याण को कम और तकनीकी क़ानून का ज़्यादा महत्व दे रहे हैं । सबसे ज़्यादा मामले इश्योरेंस कंपनियों, इलेक्ट्रॉनिक गुड्स कंपनियों, निकायों, बैंकों, बिजली व टेलीफ़ोन प्रदाता कंपनियों के ख़िलाफ़ होते हैं । इन सभी कंपनियों ने वकीलों के पैनल बनाए हुए हैं, कुछ कंपनियों ने तो उपभोक्ता मामलों के विशेषज्ञ वकील रखे हुए हैं । ऐसे में आम आदमी इनके ख़िलाफ़ खड़ा होकर मज़बूती से अपने मुक़दमे की पैरवी कर सकता है, यह

यह है अब तक की तस्वीर

देश में उपभोक्ता मंचों के गठन के बाद अब तक कुल 34 लाख 28 हज़ार 456 मामले दर्ज हुए हैं । इनमें से 30 लाख 59 हज़ार 649 मामलों का निबटारा हो चुका है, जबकि 3 लाख 68 हज़ार 807 प्रकरण विचाराधीन है । (19 जुलाई 2010 तक की स्थिति)

राष्ट्रीय आयोग

प्रकरण पेश हुए–65,017
प्रकरण तय हुए–56,664
प्रकरण लंबित–8,553
निष्कर्ष–87.15 प्रतिशत निबटारा

समस्त राज्य आयोग

प्रकरण पेश हुए–5,10,652
प्रकरण तय हुए–2,02,552
प्रकरण लंबित–1,08,130
निष्कर्ष–78.83 प्रतिशत निबटारा

समस्त उपभोक्ता मंच

प्रकरण पेश हुए–28,52,887
प्रकरण तय हुए–26,00,463
प्रकरण लंबित–02,52,324
निष्कर्ष–91.16 प्रतिशत निबटारा

राजस्थान राज्य आयोग का आंकड़ा

(31 मई 2010)

प्रकरण पेश हुए–43,828
प्रकरण तय हुए–40,642
लंकित प्रकरण–3,186

और जो कोई
अल्लाह और उसके
रसूल (सल्ल०) की
आज्ञा का पालन करे और
अल्लाह से डरे और उसकी
सीमाओं का ख़्याल रखे,
तो ऐसे ही लोग
सफल हैं ।
(क़ुरआन, 24:52)

Mohd. Hussain Mitha
Jogeshwari Mumbai

असंभव है । राज्य आयोग से लेकर राष्ट्रीय आयोग और सुप्रीम कोर्ट की इतनी नज़ीरें और इतने क़ानून हैं कि बिना वकील नियुक्त किये उपभोक्ता मामले को तय करना मतलब अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना है ।

मंच की सही तस्वीर

इस तरह के विज्ञापन लोगों को अपने अधिकार के लिए ज़ागरूक बनाने तक तो ठीक है, लेकिन यह उपभोक्ता मामलों की सुनवाई के लिए बने फ़ोरम के बारे में सही तस्वीर पेश नहीं कर रहा है । मंच में पेश करने के लिए किस तरह फ़ीस देनी है, परिवाद को सुनवाई के लिए मंजूर किये जाने के लिए 21 दिन की समयावधि है, प्रकरण में किस-किस क़ानून के प्रावधानों को टच किया गया है । यह सभी पहलू भी सामने लाने चाहिए । प्रेक्टिकली देखा जाए तो उपभोक्ता अदालतों में ज़िला मंच से लेकर राष्ट्रीय आयोग तक पारंगत वकील के बिना मामलों में ठोस कार्रवाई या पैरवी संभव नहीं है । कंपनियों ने छोटे से लेकर बड़े मामलों में वकीलों के पैनल बना रखे हैं, दूसरी ओर उपभोक्ता है जिसे जटिल क़ानून की जानकारी नहीं है । ऐसे में उसके केस का हश्र क्या होगा यह समझा जा सकता है । उपभोक्ता क़ानून इतना डेवलप व जटिल हो चुका है कि अच्छा पढ़ा लिखा व्यक्ति भी पारंगत वकील पर निर्भर रहता है । उपभोक्ता मंच के अध्यक्ष के रूप में भी श्री हरिसिंह आसनानी (पूर्वाध्यक्ष, ज़िला लोक उपभोक्ता संरक्षण, अजमेर) का । निजी अनुभव यह रहा कि ज़्यादा से ज़्यादा दस प्रतिशत मामलों में उपभोक्ता बिना वकील के परिवाद दायर कर खुद पैरवी की हो । छोटे मामलों में यह चल भी जाता है लेकिन बड़े मामलों में तो वकील करना ही पड़ता है नहीं तो आप टिक नहीं पाएंगे । ऐसे में मंच के पीठासीन अधिकारियों की ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है । उन्हें उपभोक्ता को सुनकर उसके पक्ष के क़ानून की जानकारी देनी चाहिए ताकि उपभोक्ता कल्याण के लिए बने इस क़ानून की सार्थकता सिद्ध हो सके ।

AQUIL MUKHTAR
DEVELOPERS PVT. LTD.

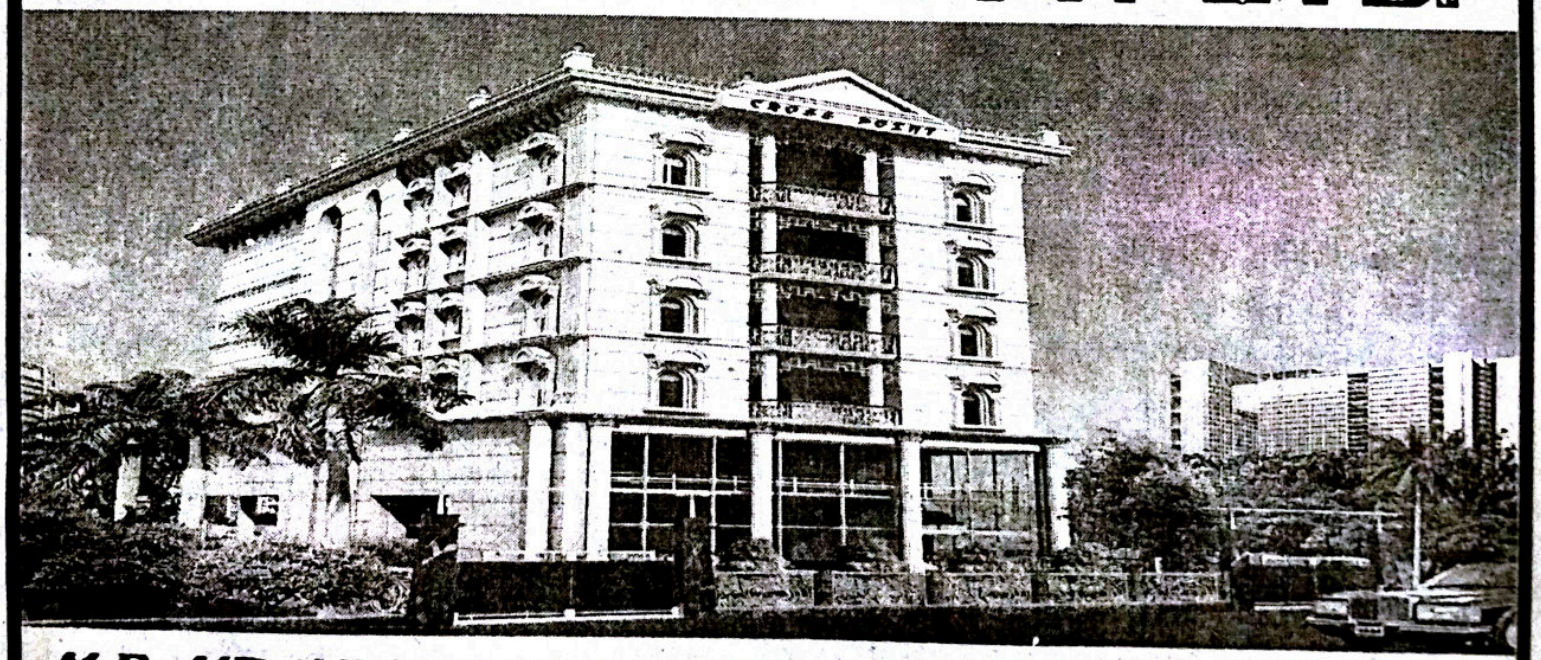

M.D. MR. MUKHTAR AHMED MOBILE NO. : 9820127170

385, Sane Guruji Marg, Next to I.T.I College (Ghass Gali),
Mumbai-400011
Tel. No. : 23482660/23482688/23482762
Fax : 23484245

Shaikh Mohd. Iqbal
Mobile : 9820085263

Tel. : 2503 1593

BHARAT OXYGEN CORPORATION

Dealers in : Industrial Gases & Mixture Gases, Medical & Surgical Equipments

Shop. No. 6, 168, L.B.S. Marg, Next to Kalpana Cinema, Kurla (W), Mumbai-400070

E-mail : Iqbal_shaikh123@yahoo.com

मिस्र में हुआ था सबसे पहले जूते का निर्माण

हम सभी काफ़ी समय से अपने पैरों की सुरक्षा के लिए कवच के रूप में जूते का प्रयोग करते आ रहे हैं । यही जूते आज फैशन की दौड़ में आ पहुंचे हैं । लेकिन शायद ही कभी किसी का इनके निर्माण या आविष्कार पर ध्यान गया होगा । जूते का आविष्कार एक आश्चर्यजनक घटना है ।

जूतों का निर्माण सबसे पहले मिस्र में हुआ था । तब जूतों का तला किसी चमड़े का या पानी में पाये जाने वाले एक ख़ास क़िस्म के पौधे का होता था । इन चीज़ों के तल्ले को पट्टी के साथ पैर से कस लिया जाता था । यह बात ईसा से 2000 वर्ष पहले की है । जूतों के बारे में भारत में भी एक कहानी प्रचलित है ।

एक राजा कुछ ज़िद्दी स्वभाव का था । वह प्रजा का समाचार लेने के लिए गुप्त रूप से घूम रहा था । घूमते-घूमते लकड़ी की खड़ाऊ पहने हुए उसके पैर ख़राब हो गये । उनमें फफोले पड़ गये । राजा दर्द के मारे नाराज़ होकर मंत्रियों से बोला कि ऐसी कोई वस्तु खोजी जाए, जिसके उपयोग से पैदल चलने में सुविधा हो और धूल भी न उड़ पाये । राजा के आदेश से सभी लोग परेशान थे । दिन भर नौकर पानी छिड़काव, सफ़ाई करते फ़िर भी धूल आ ही जाती थी । मंत्री ने राजा का संकट दूर करने के लिए इनाम की घोषणा कर दी । इस पर भी समस्या का समाधान न हो सका । एक दिन एक वृद्ध पुरुष आया । राजा के पैरों को नाप कर चमड़े का जूता पहना दिया । इस पर राजा ख़ुश हुआ । वह आराम से पैदल चलता और उसे तनिक भी कष्ट न होता था । राजा ने बहुत-सा धन उस व्यक्ति को दिया । इस तरह जूतों के प्रचलन की यह भारत में प्रथम सीढ़ी थी ।

इसी तरह ठंडे देशों में लोग चमड़े के थैलों में घास बिछाकर पैरों में पहनते थे । इस थैले को पैर के ऊपर रस्सी से कस लिया जाता था । धीरे-धीरे सुविधानुसार जूतों के डिजाइन में भी परिवर्तन हुआ । सोलहवीं शताब्दी में जूते आगे से बहुत चौड़े होते थे । 17वीं शताब्दी में ऊंची एड़ी के जूतों का फैशन रहा । फिर 18वीं सदी में ऐसे जूतों का प्रचलन बन्द हो गया, लेकिन समय के गुज़रते ऊंची एड़ी के जूतों (हील टाइप) का पुनः प्रचलन शुरू हुआ ।

भारत में चमड़े के जूतों का इतिहास सन 1550 से मिलता है । बताया जाता है कि अकबर के समय में अरब देशों से हींग मंगाई जाती थी । हींग ऊंट के चमड़े से बनी मशकों में लायी जाती थी । अकबर के समय देश की राजधानी आगरा हींग की बहुत बड़ी मंडी थी । धीरे-धीरे व्यापारियों को लगा कि ख़ाली मशकों को फेंकने के बजाय उनका कुछ उपयोग किया जाए । उन्होंने सोचा इन मशकों से जूतों का निर्माण किया जा सकता है । इस तरह हींग की मंडी जूतों की मंडी बनी । आज भी आगरा जूतों की सबसे बड़ी मंडी है ।

सबसे पहले पशु की ख़ाल को निकाल लेने के बाद सोडा-नमक लगाकर रख दिया जाता है । 4 से 5 दिन बाद इस खाल को धोया जाता है और फिर खाल को हर्र तथा बहेड़े तथा अन्य रसायनों के घोल से भरे विशाल हौज़ों में डाल दिया जाता है । यह प्रक्रिया चार-पांच बार की जाती है । इस तरीक़े से खाल साफ़ और मुलायम होती है । यह

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are___ Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(Prof Z. H. Khan) Chairman — *(Prof M. B. Zaman)* Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

सारा काम लगभग 50 दिन के अन्दर होता है । इसके बाद खाल को सुखाकर उसे रंगा जाता है । एक जोड़ी जूतों के निर्माण में 2.5 फ़ीट चमड़ा तथा 2 फ़ीट चमड़े का अस्तर लगता है । इस तरह हज़ारों पापड़ बेलने के बाद अथक परिश्रम से जूता बनाया जाता है जिसे हम पहनते हैं ।

● ज्ञान कुमारी

सांस लेने के अनोखे तरीक़े

अब हम कुछ उदाहरण देकर इन जलचरों के सांस लेने के अनोखे तरीक़ों से आपको परिचित कराएंगे ।

कई जल मकोड़े जब पानी के भीतर होते हैं, अपने शरीर में हवा के बुलबुले रखते हैं ।

महान गोताख़ोर गुबरैला अपने पंखों की ओट में हवा ले जाता है । जब यह पानी के अन्दर होता है, यह सांस लेने के लिए इस बुलबुले से आक्सीजन ले सकता है ।

बैक स्वीमर पानी की सतह पर लटक सकता है । झूलते समय यह अपने भीतर हवा ग्रहण कर सकता है । हवा का प्रत्येक बुलबुला 6 घंटे तक पानी में ठहरने में लिए काफ़ी होता है ।

जल मकड़ा हवा का एक रुपहला बुलबुला ग्रहण करके अपने आपको पानी के अन्दर घसीट लेता है । यदि इसे छेड़ा न जाए तो यह पानी के भीतर अपने को जीवित रखने के लिए जलीय घासपात के बीच हवा का कुंआ तैयार कर सकता है ।

अनेक कीड़े-कमोड़े पानी की सतह के पास उलटे लटक जाते हैं । उनके शरीर के आख़िर में खोखली नली होती है जिसके माध्यम से वे हवा ग्रहण करते हैं ।

मछली, कीड़े, ड्रैगन फ्लाई निम्फ, मेढक के नवजात बच्चे पानी में घुली हुई हवा का प्रयोग सांस लेने के लिए करते हैं इसलिए उन्हें पानी की सतह पर आने की ज़रूरत नहीं पड़ती । इनमें से कुछ छोटे परों जिन्हें गलफड़े कहते हैं, से पानी में से हवा प्राप्त करते हैं तो शेष अपनी पतली त्वचा के ज़रिये श्वसन करते हैं । ये जलचर प्राय: पानी की धार को अपने शरीर के ऊपर से गुज़रने देते हैं तथा गलफड़ों के ज़रिये और अधिक हवा ग्रहण करते हैं । वे ऐसा गलफड़ों को फड़फड़ाकर या अपने शरीर को तैराकर करते हैं ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली–6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।

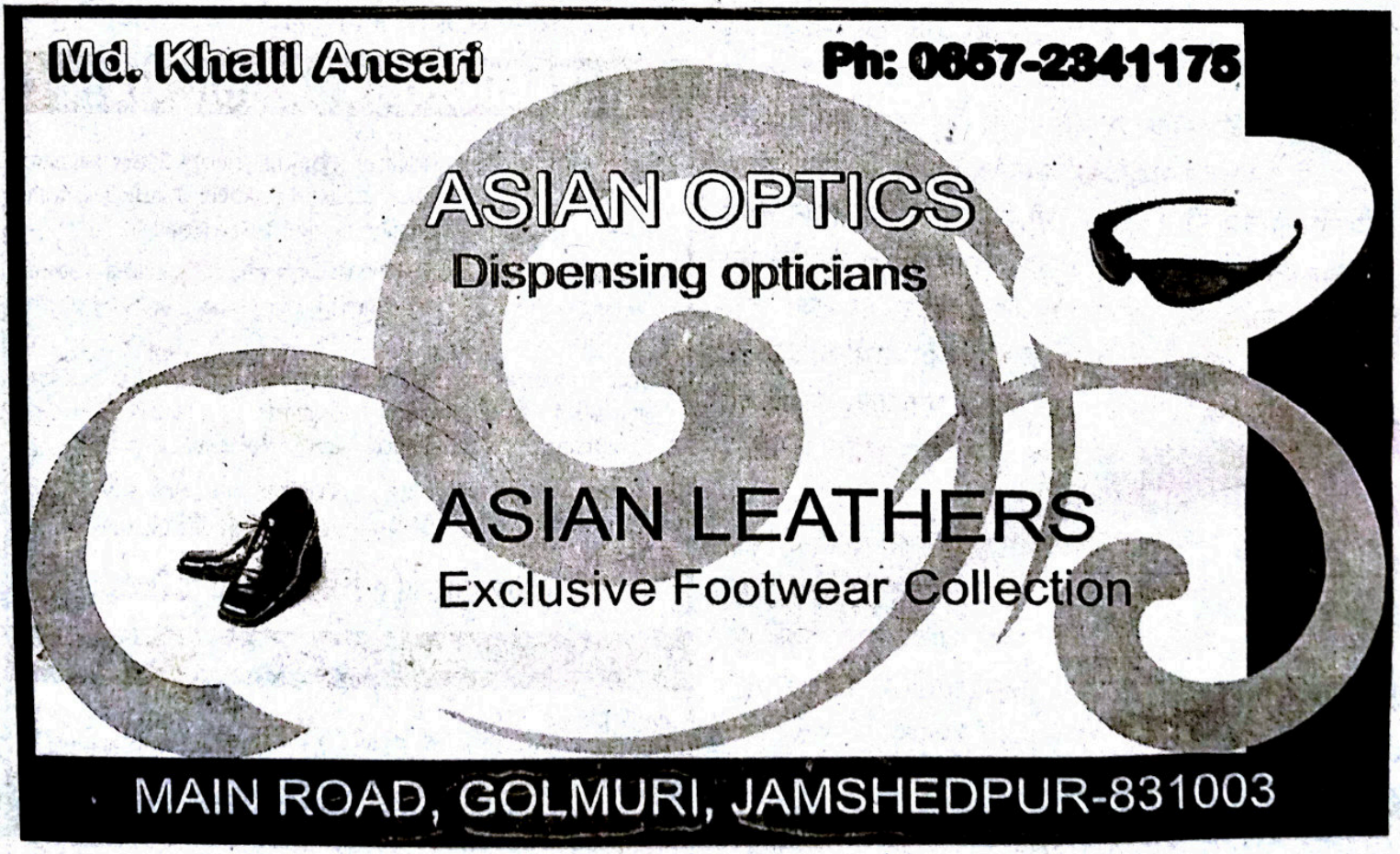

بسم الله الرحمن الرحيم

"और अल्लाह की
बन्दगी करो और उसके
साथ किसी को साझी न ठहराओ।
और अच्छा व्यवहार करो माता-पिता
के साथ, नातेदारों, अनाथों, मोहताजों,
नातेदार पड़ोसियों के साथ, और उन
पड़ोसियों के साथ जिनका संबंध न हो,
और पास के व्यक्ति के साथ,
और राह चलने वालों के साथ,
और उनके साथ जो तुम्हारे
अधिकार में हों ।"
(क़ुरआन, 4:36)

A WELL WISHER

MUMBAI

Posted on 20-21 October 2011
November 2011
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.10.2011

हिन्दी भाषियों की साहित्यिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-11

With Best Wishes from

AZAM CAMPUS, PUNE

PRIMARY SCHOOLS

H. G. M. Azam Urdu Primary School

M. C. E. Society's English Medium Primary Sc

HIGH SCHOOLS

Anglo Urdu Girls High School

Anglo Urdu Boys High School & Jr. College

COLLEGES

Abeda Inamdar Jr. College for Girls
Abeda Inamdar Senior College
H.G.M. Azam College of Edn. (English)
M.C.E. Society Jr. College of Edn. (English)
M.C.E. Society Jr. College of Edn. (Marathi)
M.C.E. Society Jr. College of Edn. (Urdu)
M.C.E. Society's School of Art
New Law Academy
Allana College of Pharmacy
Allana College of Architecture
MMerC's ZVM Unani Medical College & Hospital
M.A.R. College of Hospitality Studies & Research
M.A.R. College of Physiotherapy
M.A.R. College of Dental Science & Research Center

INSTITUTES

Allana Institute of Management Sciences
Allana Institute of Information Technology
M.C.E. Society Institute of Pharmacy
ZVM Rangoonwala Industrial Training Center
Institute of Career Development
Golden Jubilee Technical Institute
Deccan Muslim Institute & Research Center
(PAI) International Center for Management Excellence








P. A. Inamdar
President
Maharashtra Cosmopolitan Education Society, Pune



Munawar Peerbhoy
Chairman
Haji Gulam Mohd. Azam Education, Pune

2390-B, Khan Bahadur Hidayatullah Road, Azam Campus, New Modikhana, Pun
Tel. No. : 26452040/26452288, Fax No. : 26459112, Email ID : hgmat@vsnl.com